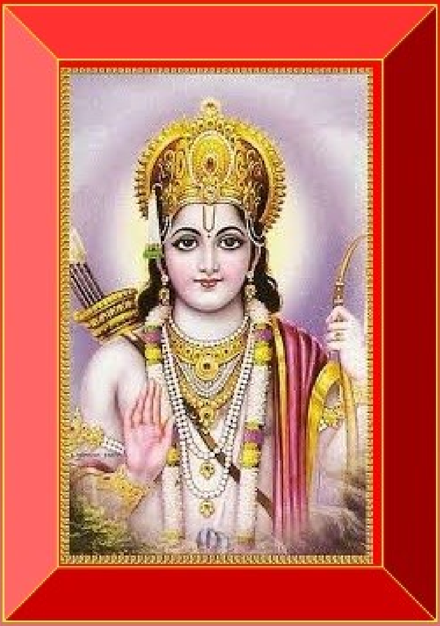

मानस का प्रसाद

डॉ हिमांशु शेखर

मानस का प्रसाद

डॉ हिमांशु शेखर

वैज्ञानिक 'जी', निदेशक (परियोजना निगरानी)

महानिदेशालय, रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन

डॉ होमी भाभा मार्ग, पाषाण, पुणे- 411021

मानस का प्रसाद: डॉ हिमांशु शेखर की एक पुस्तक

© डॉ हिमांशु शेखर

प्रकाशन का वर्ष: 2021

पता: बंगला नंबर 11, नेकलेस एरिया, आर्मामेंट कॉलोनी, पाषाण, पुणे - 411021 (भारत)

संपर्क - 9422004678, himanshudrdo@rediffmail.com

मुख्य शब्द: श्रीराम, श्रीरामचरितमानस, शिव-कथा, राम-जन्म प्रयोजन, संख्यात्मक दृष्टांत, अराधना, भक्ति, स्वान्त:सुखाय|

टंकण, निर्माण और प्रकाशन: डॉ हिमांशु शेखर

मानस का प्रसाद

डॉ हिमांशु शेखर

वैज्ञानिक

पूज्य पिताजी

डॉ किरण शंकर प्रसाद

के चरणों में सादर

समर्पित

प्रस्तावना

रामकथा को बहुत सारे ढंग से कई विद्वानों ने प्रस्तुत किया है| मुझे कथा की प्रासंगिकता, समसामयिकता और अवदानो पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देनी है| न मै एक समानांतर कथा का निर्माण कर पाठको की दुविधा और बढ़ाना चाहता हूँ| पर श्रीरामचरितमानस का पाठ कर इस बात का एहसास हुआ कि कथा से ज्यादा उसमें प्रस्तुत दृष्टांत महत्वपूर्ण है| कथा में मन और तन की मुक्ति का मार्ग स्पष्ट नजर आया| इस सन्दर्भ में ही इस पुस्तक का निर्माण हुआ है| यह एक स्वान्त: सुखाय रचना है| मैं तो इसमें विज्ञान के सन्दर्भ खोजने की कोशिश में था, पर प्रभु श्रीराम की कृपा से कुछ अलग तरह का निर्माण संभव हो गया |

इसलिए ,पहले अध्याय में सर्वप्रथम राम कथा के संदर्भों को क्रमबद्ध ढंग से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ| दूसरा अध्याय श्रीरामचरितमानस के विभिन्न काण्डों में दिए गए भजन, स्तुति, अराधना और अर्चना का संकलन है| इसमें मुख्य रूप से भगवान श्रीराम की अराधना ही है, पर माता भवानी की एक स्तुति भी इसमें शामिल की गई है| तीसरा अध्याय शिवपार्वती कथा से संबंद्ध है, जिसे राम कथा के अरण्य काण्ड में जोड़ दिया गया है| चौथा अध्याय राम जन्म प्रयोजन की व्याख्या करता है| रावण और राम की उत्पत्ति में पूर्व जन्म की भूमिका उद्धृत है| विभिन्न शापों और वरदानों की एक झलक दी गई है| पांचवां अध्याय कुछ ऐसे वर्गीकरणों का संकलन है, जो आज भी प्रासंगिक है| वैसे नीति के सन्दर्भ लिए गए है, जिनमें कुछ

संख्या का बोध होता है और जिनमे से कुछ को आधुनिक विज्ञान भी पुष्ट करता है |

इस पुस्तक का मूल उद्देश्य भक्ति है| पाठकों में भले यह भक्ति का सृजन न कर पाए, क्योकि मेरी लेखनी उतनी सशक्त नहीं है, पर मेरे हृदय में इसने अप्रतिम भक्ति का संचार किया है| मुझे अपना मार्ग चुनने में आई दुविधा का समाधान इसमें मिला| मै अपनी लेखनी के माध्यम से जनसाधारण को श्रीरामचरितमानस के कुछ उन तथ्यों की और खींचना चाहता हूँ जिनका एक जगह संकलन पहले नही किया गया है |

मैं इस पुस्तक को अपने पिता पूजनीय डॉ किरण शंकर प्रसाद को उनके जन्मदिन (03 सितम्बर) पर समर्पित करता हूँ, जिन्होंने रामकथा के दृष्टान्तों से मुझे संस्कृति से बांधे

रखा है| आशा करता हूँ कि पुस्तक की सम्यक समीक्षा कर सुधि पाठकगण मेरा मार्गदर्शन करेगे|

धन्यवाद|

डॉ हिमांशु शेखर

पुणे

03.09.2021

समर्पण

मेरे पिताजी हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान् और समालोचक है| उन्होंने राम कथा के संबंध में मेरी अभिरुचि जागृत की है |लंका के सन्दर्भ में राम नाम का महत्व स्थापित करते हुए उन्होंने एक बार कहा था कि ऐसा भी सोचा जा सकता है कि ये नाम शासक रावण और उसकी पत्नी मंदोदरी के प्रथम अक्षरों के मेल से बनाता है| यह भी संभव है कि विभीषण ने रावण को यही बताकर भ्रम में रखा हो कि वो वास्तव में रावण और मंदोदरी के प्रथम अक्षरों का जाप कर रहा है| मेरे जैसे अबोध, मूढमति बालक के लिए यह व्याख्या सामान्य परिभाषा से बिलकुल अलग थी| पर एक बात समझ में आई कि हर कथा, हर कथानक, हर सन्दर्भ और हर घटना का एक विलुप्त पक्ष हमेशा रहता है| आज के सन्दर्भ में अगर ऐसी

व्याख्या नही की जाए, तो कथा धीरे धीरे लुप्तप्राय हो जाती है|

आचार्य नरेंद्र कोहली की रामकथा द्वारा आज के परिपेक्ष्य में जो प्रासंगिकता रामकथा की उभारी गई है उससे मैं अपने पिताजी के कारण ही रूबरू हो पाया| विभिन्न प्रकार के सन्दर्भों और दृष्टान्तों में विभेद का कारण भी उन्होंने मुझे समझाया है| इसके बाद मैंने Amish के Ram: Scion of IKSHVAKU, SITA: Warrior of Mithila और Raavan: Enemy of Aryavarta का अध्ययन किया| आधुनिक युग के परिपेक्ष्य में श्री राम के मानवीकृत रूप की छवि मिली |

मेरे पिताजी ने ही मुझे लंका पर आक्रमण के लिए वानर और रीछ की सेना का प्रबंधन (management) की दृष्टि से औचित्य

समझाया था | सामान्य परिस्थिति में वनवास राम को मिला था और सीताहरण एक अप्रत्याशित दुर्घटना थी, जिसमें अयोध्या की अजेय सेना को बुलाया जा सकता था| ये बात भी सर्वविदित है कि सीताहरण अवध के सम्मान का हनन था और अवध को इसका जवाब देने के लिए तत्पर किया जा सकता था| पर अवध की सेना को बुलाना श्री राम ने उचित क्यों नही समझा ? इसमें निहित आधुनिक प्रबंधन की सीख मेरे पिताजी ने मुझे बतलाई| उन्होंने ये बतलाया कि हनुमानजी के वर्णन के आधार पर लंका के चारों ओर ऊंची ऊंची दीवारे थीं| दीवारों के किनारे गहरे नाले थे जिनमें पानी भर कर दुश्मन की सेना का मार्ग आसानी से अवरूद्ध हो सकता था| अगर अवध की सेना आती तो इन ऊंची दीवारों से घिरी लंका की अभेद्य

दीवारों से उन्हें जूझना पड़ता| साथ ही ऊंची दीवारों पर चढने में भी सैनिक उतने सक्षम नही होते थे| वानर और रीछों को दीवारों पर चढने के लिए किसी प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है| इसलिए त्वरित फल और उपलब्ध साधनों का सम्यक प्रयोग करते हुए श्रीराम ने वानरसहारा रीछ की सेना का लेना ही उचित समझा| रामकथा में प्रबंधन के इस पथ को मेरे पिताजी ने मुझे समझाया है |

मैंने इस पुस्तक के स्वरूप के संबंध में कोई पूर्वाग्रह नही रखा था और श्रीराम ने जैसा चाहा वैसी ये पुस्तक बन गई है और मै इसे अपने पिताजी को उनके जन्मदिन पर समर्पित कर रहा हूँ |

डॉ हिमांशु शेखर

पुणे

03.09.2021

विषय सूची

प्रस्तावना 5

समर्पण 9

राम कथा 14

भगवान की स्तुति 19

शिव पार्वती कथा 59

श्रीराम अवतरण प्रयोजन 83

संख्यात्मक सन्दर्भ 103

संख्या दो **104**

संख्या तीन **106**

संख्या चार **114**

संख्या पांच **136**

संख्या छः **141**

संख्या सात **143**

संख्या आठ **144**

संख्या नौ **145**

संख्या अट्ठारह **149**

लेखक 151

राम कथा

एक विज्ञान के प्रशिक्षु से साहित्य की जो भी उम्मीद की जा सकती है, वो प्रस्तुत है| यह श्रीरामचरितमानस में वर्णित राम कथा का एक आरेख है, जो कथा के सिलसिलेवार विवरण को प्रस्तुत करता है| मेरी दृष्टि में राम कथा ऐसी है-:

पूर्व जन्म कथा → अयोध्या में राम का अवतरण → बाल लीला-→ विश्वामित्र संग गमन → ताड़का वध → मारीच उत्पतन → सुबाहु हनन → अहल्या उद्धार → मिथिला गमन → धनुष भंजन → परशुराम संग विवाद → परिणय सूत्र बंधन → अयोध्या आगमन → राज्याभिषेक उदघोषणा → वन प्रस्थान → तमसा तट आगमन → श्रृंगवेरपुर गमन →

गंगा दर्शन एवं स्नान → निषादराज गुह मिलन → तीर्थराज प्रयाग दर्शन → ऋषि भरद्वाज मिलन → यमुना पर अवतरण → वाल्मीकि आश्रम गमन → मंदाकिनी नदी स्नान → चित्रकूट विश्राम → भरत मिलन → पादुका त्याग → जयंत काक प्रकरण → अत्रि आश्रम आगमन → अनसूयासीता- मिलन → विराध हनन → शरभंग योगाग्नि गमन → अगस्त्य शिष्य सुतीक्ष्ण मुनि वृतांत → अगस्त्य आश्रम आगमन → पंचवटी निर्माण → अग्नि को मूल सीता दानकर छद्म सीता का निर्माण → जटायु मिलन → शूर्पनखा काण्ड → खर-दूषण-त्रिशिरा हनन → स्वर्ण मृग मारीच वध → सीता हरण → जटायु मरण → कबंध हनन → शबरी मिलन → पंपा सरोवर गमन → नारद मिलन → ऋष्यमूक पर्वत गमन → हनुमान मिलन →

सुग्रीव मैत्री → बालि हनन → प्रवर्षण पर्वत निवास → सीता अन्वेषण → संपाती वानर मिलन → हनुमान समुद्र लंघन → अशोक वाटिका प्रकरण → हनुमान कृत अक्षयकुमार वध → हनुमान द्वारा लंका दहन → वानर द्वारा मधुवन विध्वंस → समुद्र तट आगमन → रामेश्वरम निर्माण → विभीषण मिलन → सेतु बंधन → लंका गमन → अंगद दूत कर्म → लक्ष्मण मूर्छा → सुषेण के उपचार → संजीवनी आगमन → कुम्भकर्ण वध → मेघनाथ वध → रावण वध → अग्नि द्वारा मूल सीता से पुनर्मिलन → अयोध्या आगमन → राज्याभिषेक|

इस पुस्तक के माध्यम से मेरा उद्देश्य कथा कहना बिलकुल नही है| आज सब कुछ संक्षेप में पढ़ने और लिखने की प्रथा है और आवश्यकता पड़ने पर इंटरनेट खंगालने वाली

पीढी के लिए, राम कथा का ये प्रारूप एक अच्छी अनुभूति होगी| साथ ही लक्ष्मण रेखा का विवरण भी अरण्यकाण्ड में नही मिलता है| लक्ष्मण जी ने कोई रेखा खीचकर सीताजी को उसके पार न जाने की सलाह दी थी , ऐसा तो श्रीरामचरितमानस के अरण्यकाण्ड में नही है, पर मंदोदरी द्वारा रावण को समझाने के क्रम में लंकाकाण्ड में लक्ष्मण रेखा का जिक्र मिलता है|

रामानुज लघु रेख खचाई|

सोउ नहिं नाघेहु असि मनुसाई||

हाँ! पूर्णता के लिए श्रीरामचरितमानस में जो सात काण्ड है उनका नाम मै यहाँ देकर इस अध्याय को समाप्त करता हूँ |

बालकाण्ड →

अयोध्याकाण्ड →

अरण्यकाण्ड →

किष्किन्धाकाण्ड →

सुन्दरकाण्ड →

लंकाकाण्ड →

उत्तरकाण्ड

भगवान की स्तुति

श्री रामचरितमानस में कई स्थलों पर विभिन्न भगवानो, देवताओं की अराधना प्रस्तुत की गई है, जिनका संकलन एक स्थान पर इस अध्याय में किया गया है| इनके पाठ करने से भगवान के चरणों में आस्था दृढ़ होती है, मन भक्ति में रमता है और सांसारिक दुखों को सहन करने की क्षमता आती है| जिसतरह राम का नाम ही कलियुग में भगवान को प्रसन्न करने के लिए काफी है, उसीतरह मेरा ये मानना है कि वन्दना, अर्चना ,अराधना में लिखी गई चौपाइयो का पाठ उनके मूल रूप में ही होना चाहिए| इसलिए इस अध्याय में विषय प्रवेश के रूप में सिर्फ वन्दना की चौपाइयां है, जिनका पाठ हृदय में सुख, शान्ति, भक्ति और उत्साह भर देगा| चूँकि

मैंने ये पुस्तक स्वान्त: सुखाय लिखी है और इसमें संपूर्ण राम कथा कहने से ज्यादा-मैंने उन सन्दर्भों को शामिल करने पर बल दिया है, जिनसे मेरी अंतरात्मा प्रभावित हुई है, आनंदित हुई है |

जब देवगण भगवान की खोज में स्रष्टा ब्रह्मा जी के पास पहुंचे थे, तब ब्रह्मा जी ने अत्यंत आनंदित होकर निम्नांकित स्तुति की थी|

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता|

गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिन्धुसुता प्रिय कांता||

पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानई कोई|

जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई||

जय जय अबिनासी सब घट बासी ब्यापक परमानंदा|

अबिगत गोतीतं चरित पुनीतन मायारहित मुकुंदा||

जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनिबृंदा|

निसि बासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा||

जेहिं सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा|

सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा||

जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा|

मन बचन क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुरजूथा||

सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहूँ कोउ नहिं जाना|

जेहि दीन पियारे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना||

भव बारिधि मंदर सब बिधि सुन्दर गुनमंदिर सुखपुंजा|

मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा||

जब भगवान श्रीराम ने धरती पर अवतार लिया, तो उनकी अराधना में प्रस्तुत छंद बहुत ही आनंददायी है| इसका तो मैं बचपन से पाठ करता आ रहा हूँ|

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी|

हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी||

लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी|

भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी||

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौ अनंता|

माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता||

करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता|

सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता||

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै|

मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै||

उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै|

कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै||

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा|

कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा||

सुनी बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा|

यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहि ते न परहिं भवकूपा||

पाषाणवत अहल्या ने भी प्रकट होकर भगवान की अराधना की थी| उसकी चौपाइयां निम्नांकित है|

मैं नारी अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई|

राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहिं आई||

मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मै माना|

देखेउँ भरि लोचन हरि भव मोचन इहइ लाभ संकर जाना||

बिनती प्रभु मोरी मै मति मोरी नाथ न मागउँ बर आना|

पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना||

जेहिं पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी|

सोई पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी||

एहि भांति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरण परी|

जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पति लोक अनंद भरी||

सीताजी ने भवानी माता के मंदिर में शादी से पूर्व उनकी चरण वन्दना की थी| इसा पाठ में यह एकमात्र ऐसी स्तुति है, जो प्रभु श्री राम को समर्पित नही है|

जय जय गिरिबरराज किसोरी|

जय महेस मुख चंद चकोरी||

जय गजबदन षडानन माता|

जगत जननि दामिनी दुति गाता||

नहीं तव आदि मध्य अवसाना|

अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना||

भव भव बिभव पराभव कारिनि |

बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि||

पतिदेवता सुतीय महुं मातु प्रथम तव रेख|

महिमा अमित न सकहिं कही सहस सारदा सेष||

सेवत तोहि सुफल फल चारि|

बरदायिनी पुरारि पियारि||

देबि पूजि पद कमल तुम्हारे|

सुर नर मुनि होहिं सुखारे||

मोर मनोरथु जानहु नींके |

बसहु सदा उर पुर सबहिं के||

कीन्हेउँ प्रगट न कारण तेहिं|

अस कही चरण गाहे बैदेहि||

धनुष भंग के पश्चात परशुराम का मोह भंग होने पर उन्होंने भगवान की अराधना में निम्नांकित पद कहे|

जय रघुबंस बनज बन भानू|

गहन दनुज कुल दहन कृसानू||

जय सुर बिप्र धेनु हितकारी|

जय मद मोह कोह भ्रम हारी||

बिनय सील करुना गुन सागर|

जयति बचन रचना अति नागर||

सेवक सुखद सुभग सब अंगा|

जय सरीर छबि कोटि अनंगा||

करौ काह मुख एक प्रसंसा|

जय महेस मन मानस हंसा||

अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता |

छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता||

कहि जय जय जय रघुकुलकेतु |

भृगुपति गए बनहिं तप हेतु||

अत्रि ऋषि द्वारा संस्कृत के पद कहकर श्रीराम की अराधना में निम्न प्रकार की गई-:

नमामि भक्त वत्सलं |कृपालु शील कोमलं||

भजामि ते पदांबुजं| अकामिनां स्वधामदं|

निकाम श्याम सुन्दरं| भावान्बुनाथ मंदरं||

प्रफुल्ल कंज लोचनं| मदादि दोष मोचनं||

प्रलंब बाहु विक्रमं| प्रभोअप्रमेय वैभवं||

निषंग चाप सायकं| धरं त्रिलोक नायकं||

दिनेश वंश मंडनं| महेश चाप खंडनं||

मुनींद्र संत रंजनं| सुरारि वृन्द भंजनं||

मनोज वैरि वंदितं| अजादि देव सेवितं||

विशुद्ध बोध विग्रहं| समस्त दूषनापहं||

नमामि इंदिरा पतिं| सुखाकरं सतां गतिं||

भजे सशक्ति सानुजं |शचि पति प्रियानुजं||

त्वदंघ्रि मूल ये नरा| भजन्ति हीन मत्सरा||

पतन्ति नो भवार्ण वे |वितर्क वीचि संकुले||

विविक्त वासिन: सदा| भजन्ति मुक्तये मुदा||

निरस्य इन्द्रियादिकं | पयंति ते गतिं स्वकं||

तमेकमद्भुतं प्रभुं | निरीहमीश्वरं विभुं||

जगद्गुरुं च शाश्वतं| तुरीयमेव केवलं||

भजामि भाव वल्लभं| कुयोगिनां सुदुर्लभं||

स्वभक्त कल्प पादपं| समं सुसेव्यमन्वहं||

अनूप रूप भूपतिं| नातोअहमुर्विजा पतिं||

प्रसीद मे नमामि ते| पदाब्ज भक्ति देहि मे||

पठन्ति ये स्तवन इदं| नरादरेन ते पदं||

व्रजन्ति नात्र संशयं |त्वदीय भक्ति संयुता||:

अगस्त्य ऋषि के शिष्य सुतीक्ष्ण ने भी रामागमन के समय अरण्य काण्ड में श्रीराम की अराधना की थी|

श्याम तामरस दाम शरीरं|

जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं||

पाणि चाप शर कटि तूणीरं|

नौमि निरंतर श्रीरघुवीरं||

मोह विपिन घन दहन कृशानु|:

संत सरोरुह कानन भानु||:

निसिचर करि वरूथ मृगराज |:

त्रातु सदा नो भाव खग बाज||:

अरूण नयन राजीव सुवेशं|

सीता नयन चकोर निशेशं||

हर हृदि मानस बाल मरालं|

नौमि राम उर बाहु विशालं||

संशय सर्प ग्रसन उरगाद |:

शमन सुकर्कश तर्क विषाद||:

भव भंजन रंजन सुर यूथ|:

त्रातु सदा नो कृपा वरूथ||:

निर्गुन सगुन विषम सम रूपं|

ज्ञान गिरा गोतीतमनूपं||

अमलमखिलमनवद्यमपारं|

नौमि राम भंजन महि भारं||

भक्त कल्पपादप आराम |:

तर्जन क्रोध लोभ मद काम||:

अति नागर भव सागर सेतु |:

त्रातु सदा दिनकर कुल केतु||:

अतुलित भुज प्रताप बल धाम |:

कलि मल विपुल विभंजन नाम||:

धर्म वर्म नर्मद गुण ग्राम |:

संतत शं तनोतु मम राम||:

जदपि बिरज ब्यापक अबिनासी |

सब के हृदयँ निरंतर बासी||

तदपि अनुज श्री सहित खरारी |

बसतु मनसि मम कानन चारी||

जे जानहिं ते जानहूँ स्वामी|

सगुन अगुन उर अंतरजामी||

जो कोसलपति राजिव नयना|

करउ सो राम हृदय मम अयना||

अस अभिमान जाइ जनि भोरे|

मै सेवक रघुपति पति मोरे||

मृत्यु पूर्व राम मिलन के समय पक्षिराज जटायु ने भी भगवान श्रीराम की स्तुति की थी|

जय राम रूप अनूप निर्गुण सगुन गुन प्रेरक सही|

दससीस बाहु प्रचंड खंडन चाँद सर मंडन मही||

पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं|

नित नौमि रामु कृपालु बाहु बिसाल भव भय मोचनं||

बलप्रमेयमनादिमजमब्यक्तमेकमगोचरं|

गोबिंद गोपर द्वंद्वहर बिग्यानघन धरनीधरं||

जे राम मन्त्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं|

नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजनं||

जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म ब्यापक बिराज अज कहि गावहिं|

करि ध्यान ग्यान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहिं||

सो प्रगट करुना कंद सोभा बृंद अग जग मोहई|

मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई||

जो अगम सुगम सुभाव निर्मल असम सम सीतल सदा|

पस्यन्ति जं जोगी जतन करि करत मन गो बस सदा||

सो राम रमा निवास संतत दास बस त्रिभुवन धनी|

मम उर बसउ सो समन संसृति जासु कीरति पावनी|

रावण वध के पश्चात देवताओं ने श्रीराम की स्तुति में निम्नांकित पद कहे थे-:

जय कृपा कंद मुकुंद द्वन्द हरन सरन सुखप्रद प्रभो|

खल दल बिदारन परम कारन कारुनीक सदा बिभो||

सुर सुमन बरषहिं हरष संकुल बाज दुन्दुभि गहगही|

संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु सोभा लही||

सिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं|

जनु नील गिरि पर तड़ित पटल समेत उडुगन भ्राजहीं||

भुजदंड सर कोदंड फेरत रुधिर कन तन अति बने|

जनु रायमुनीं तमाल पर बैठीं बिपुल सुख आपने||

रावण वध के बाद देवताओं ने भी श्रीराम की स्तुति की थी|

दीन बंधु दयाल रघुराया|

देव कीन्हि देवन्ह पर जाया||

बिस्व द्रोह रत यह खल कामी|

निज अघ गयउ कुमारग गामी||

तुम्ह समरूप ब्रह्म अबिनासी|

सदा एकरस सहज उदासी||

अकल अगुन अज अनघ अनामय |

अजित अमोघसक्ति करुणामय||

मीन कमठ सूकर नरहरी |

बामन परसुराम बपु धरी|

जब जब नाथ सुरन्ह दुखु पायो|

नाना तनु धरि तुम्हइं नसायो||

यह खल मलिन सदा सुरद्रोही|

काम लोभ मद रत अति कोही||

अधम सिरोमनि तव पद पावा|

यह हमरें मन बिसमय आवा||

हम देवता परम अधिकारी|

स्वारथ रत प्रभु भगति बिसारी||

भाव प्रबाहँ संतत हम परे|

अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे||

ब्रह्मा जी ने भी इस समय श्रीराम की स्तुति की थी-:

जय राम सदा सुखधाम हरे|

रघुनायक सायक चाप धरे||

भव बारन दारन सिंह प्रभो|

गुन सागर नागर नाथ बिभो||

तन काम अनेक अनूप छबी|

गुन गावत सिद्‌ध मुनीन्द्र कबी||

जसु पावन रावन नाग महा|

खगनाथ जथा करि कोप गहा||

जन रंजन भंजन सोक भयं |

गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयं||

अवतार उदार अपार गुनं|

महि भार बिभंजन ग्यानघनं||

अज ब्यापकमेकमनादि सदा|

करुनाकर राम नमामि मुदा||

रघुबंस बिभूषन दूषन हा |

कृत भूप बिभीषन दीन रहा||

गुन ग्यान निधान अमान अजंनित |

राम नमामि बिभुं बिरजं||

भुजदंड प्रचंड प्रताप बलंखल |

बृंद निकंद महा कुसलं||

बिनु कारन दीन दयाल हितं|

छबि धाम नामामि रमा सहितं||

भव तारन कारन काज परं|

मन संभव दारुन दोष हरं||

सर चाप मनोहर त्रोन धरं|

जलाजारून लोचन भूप बरं||

सुख मंदिर सुन्दर श्रीरमनं|

मद मार मुधा ममता समनं||

अनवद्य अखंड न गोचर गो|

सबरूप सदा सब होइ न गो||

इति बेद बदंति न दंतकथा|

रबि आतप भिन्नमभिन्न जथा||

कृतकृत्य बिभो सब बानर ए|

निरखंति तवानन सादर ए||

धिग जीवन देव सरीर हरे|

तव भक्ति बिना भाव भूलि परे||

अब दीनदयाल दया करिऐ |

मति मोरी बिभेदकरी हरिऐ||

जेहि ते बिपरीत क्रिया करिऐदुःख |

सो सुख मानि सुखी चरिऐ||

खल खंडन मंडन रामी छमा|

पद पंकज सेवित संभु उमा||

नृप नायक दे बरदानमिदं|

चरनांबुज प्रेमु सदा सुभदं||

देवराज इंद्र ने भी इस समय श्रीराम की स्तुति की थी-:

जय राम सोभा धाम| दायक प्रनत बिश्राम||

धृत त्रोन बर सर चाप| भुजदंड प्रबल प्रताप||

जय दूषनारि खरारी| मर्दन निसाचर धारि||

यह दुष्ट मारेउ नाथ| भए देव सकल सनाथ|

जय हरन धरनी भार| महिमा उदार अपार||

जय रावनारि कृपाल| किए जातुधान बिहाल||

लंकेस अति बल गर्ब| किए बस्य सुर गंधर्ब||

मुनि सिद्ध नर खग नाग| हठि पंथ सब के लाग||

परद्रोह रत अति दुष्ट | पायो सो फलु पापिष्ट||

अब सुनहु दीन दयाल| राजीव नयन बिसाल||

मोहि रहा अति अभिमान| नहीं कोउ मोहि समान||

अब देखि प्रभु पद कंज |गत मान प्रद दुख पुंज||

कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव| अब्यक्त जेहि श्रुति गाव||

मोहि भाव कोसल भूप| श्रीराम सगुन सरूप||

बैदेहि अनुज समेत| मम हृदयँ करहु निकेत||

मोहि जानिऐ निज दास| दे भक्ति रमानिवास||

दे भक्ति रमानिवास त्रास हरन सरन सुखदायकं|

सुख धाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं||

सुर बृंद रंजन द्वन्द भंजन मनुज तनु अतुलितबलं|

ब्रह्मादि संकर सेबी राम नमामि करुना कोमलं||

महादेव त्रिपुरारि शिव ने भी इस समय श्रीराम की स्तुति की थी-:

मामभिरक्षय रघुकुल नायक|

धृत बर चाप रुचिर कर सायक||

मोह महा घन पटल प्रभंजन|

संसय बिपिन अनल सुर रंजन||

अगुन सगुन गुन मंदिर सुन्दर|

भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर||

काम क्रोध मद गज पंचानन|

बसहु निरंतर जन मन कानन||

बिषय मनोरथ पुंज कंज बन|

प्रबल तुषार उदार पार मन||

भव बारिधि मंदर परमं दर|

बारय तारय संसृति दुस्तर||

स्याम गात राजीव बिलोचन|

दीन बंधु प्रनतारति मोचन||

अनुज जानकी सहित निरंतर|

बसहु राम नृप मम उर अंतर||

राज्याभिषेक के पूर्व वेदों ने भी श्रीराम की स्तुति की थी-:

जय सगुन निर्गुन रूप रूप अनूप भूप सिरोमने|

दस कन्धरादि प्रचंड निसिचर प्रबल खल
भुज बल हने||

अवतार नर संसार भार बिभंजि दारुन दुःख
दहे|

जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संजुक्त सक्ति
नमामहे||

तव बिषम माया बस सुरासुर नाग नर अग
जग हरे|

भव पंथ भ्रमत अमित दिवस निसि काल
कर्म गुननि भरे||

जे नाथ करि करुना बिलोके त्रिबिध दुख ते
निर्बहे|

भाव खेद छेदन दच्छ हम कहुं रच्छ राम
नमामहे||

जे ग्यान मान बिमत्त तव भव हरनि भक्ति न आदरी|

ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी||

बिस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे|

जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भव नाथ सो समरामहे||

जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनिपतिनी तरी|

नख निर्गता मुनि बंदिता त्रैलोक पावनि सुरसरी||

ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किन लहे|

पद कंज द्वन्द मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे||

अब्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने|

षट कंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने||

फल जुगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे|

पल्लवत फूलत नवल नित संसार बिटप नमामहे||

जे ब्रह्म अजमद्वैतमनुभवगम्य मन पर ध्यावहीं|

ते कहहूँ जानहूँ नाथ हम तव सगुन जस नित गावहीं||

करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह बर मागहीं|

मन बचन कर्म बिकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं||

राज्याभिषेक के पूर्व भगवान शिव ने भी श्रीराम की स्तुति की थी| यह प्रभु श्रीराम की एक प्रसिद्द अर्चना है, जिसका पाठ असीम सुख देता है|

जय राम रमा रमनं समनं |

भवताप भयाकुल पाहि जनं||

अवधेस सुरेस रमेस बिभो|

सरनागत मागत पाहि प्रभो||

दससीस बिनासन बीस भुजा|

कृत दूरि महा महि भूरि रुजा||

रजनीचर बृंद पतंग रहे|

सर पावक तेज प्रचंड दहे||

महि मंडल मंडन चारुतरं|

धृत सायक चाप निषंग वरं||

मम मोह महा ममता रजनी|

ताम पुंज दिवाकर तेज अनी||

मनजात किरात निपात किए|

मृग लोग कुभोग सरेन हिए||

हति नाथ अनाथनि पाहि हरे|

बिषया बन पावँर भूलि परे||

बहु रोग बियोगन्हिलोग हए |

भवदंघ्रइ निरादर के फल ए||

भाव सिन्धु अगाध परे नर ते|

पग पंकज प्रेम न जे करते||

अति दीन मलीन दुखी नितहीं|

जिन्ह कें पंकज प्रीति नहीं||

अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें|

प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें||

नहिं राग न लोभ न मान मदा|

तिन्ह कें सम वैभव वा बिपदा||

एहि ते तव सेवक होत मुदा|

मुनि त्यागत जोग भरोस सदा||

करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ |

पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ||

सम मानि निरादर आदरही|

सब संत सुखी विचरन्ति मही||

मुनि मानस पंकज भृंग भजे|

रघुबीर महा रनधीर अजे||

तव नाम जपामि नमामि हरी|

भाव रोग महागद मान अरी||

गुन सील कृपा परमायतनं |

प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं||

रघुनंद निकंदय द्वन्द्वघनं |

महिपाल बिलोके दीन जनं||

राम राज्य की स्थापना के बाद अयोध्या में सनाकादि मुनियो ने भी श्रीराम की स्तुति की थी-:

जय भगवंत अनंत अनामय|

अनघ अनेक एक करुनामय||

जय निर्गुन जय जय गुन सागर|

सुख मंदिर सुन्दर अति नागर||

जय इंदिरा रमन जय भूधर|

अनुपम अज अनादि सोभाकर||

ग्यान निधान अमान मानप्रद|

पावन सुजस पुरान बेद बद||

तग्य कृतग्य अग्यता भंजन|

नाम अनेक अनाम निरंजन||

सर्ब सर्बगत सर्ब उरालय |

बससि सदा हम कहुं परिपालय||

द्वन्द बिपति भव फंद बिभंजय|

हदि बसि राम काम मद गंजय||

परमानंद कृपायतन मन परिपूरन काम|

प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम||

देहु भगति रघुपति अति पावनि |

त्रिबिधि ताप भाव दाप नसावनि|

प्रनत काम सुरधेनु कलपतरु|

होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह बरु||

भव बारिधि कुंभज रघुनायक|

सेवत सुलभ सकल सुख दायक||

मन संभव दारुन दुःख दारय|

दीनबंधु समता बिस्तारय||

आस त्रास इरिषादि निवारक|

बिनय बिबेक बिरति बिस्तारक||

भूप मौलि मनि मंडन धरनी|

देहि भगति संसृति सरि तरनी||

मुनि मन मानस हंस निरंतर|

चरन कमल बंदित अज संकर||

रघुकुल केतु सेतु श्रुति रच्छक|

काल करम सुभाउ गुन भच्छक||

राम राज्य की स्थापना के बाद अयोध्या में महर्षि नारद ने भी श्रीराम की स्तुति की थी-:

मामवलोकय पंकज लोचन|

कृपा बिलोकनि सोच बिमोचन||

नील तामरस स्याम काम अरि|

हृदय कंज मकरंद मधुप हरि||

जातुधान बरूथ बल भंजन|

मुनि सज्जन रंजन अघ गंजन||

भूसुर ससि नव बृंद बलाहक|

असरन सरन दीन जन गाहक||

भुजबल बिपुल भार महि खंडित|

खर दूषन बिराध बध पंडित||

रावनारि सुखरूप भूपबर|

जय दसरथ कुल कुमुद सुधारक||

सुजस पुरान बिदित निगमागम|

गावत सुर मुनि संत समागम||

कारुनीक ब्यलीक मद खंडन|

सब बिधि कुसल कोसला मंडन||

शिव पार्वती कथा

श्रीरामचरितमानस वैसे तो राम की कथा है, राम जी के जीवन चरित्र का विवरण है, पर इसके आरम्भ में शिव पार्वती की कथा का समावेश दिखता है| शिव की राम में अनन्य भक्ति बार बार प्रस्तुत की गई है| बार बार शिव को श्री राम के सलोने रूप का दर्शन पाने के लिए लालायित दिखलाया गया है| शिव जी के रोमांच का वर्णन बार बार इस स्तर पर किया गया है, जो कलयुग में भगवान को प्रसन्न करने के साधन रामनाम के जाप के समकक्ष माना जा सकता है|

भगवान शिव ने बार बार रामनाम का जाप कर कलियुग के समाज को ये सन्देश दिया है कि ईश्वर की अनुकंपा, उनका स्नेह, उनका

वरदहस्त पाने के लिए रामनाम का उच्चारण ही एकमात्र तरीका है| वैसे तो मूल वर्णन राम कथा का ही है ,पर प्रकारांतर से शिव-पार्वती की कथा का आनंद भी इसमें निहित है |

वास्तव में मेरी इस पुस्तक में रामचरितमानस की सार्थकता और प्रासंगिकता स्थापित करने की कोशिश नही की गई है| कालचक्र में प्रस्तुत नीतिगत दृष्टान्तों में उत्पन्न भ्रम का निवारण भी आज के सन्दर्भ में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया गया है| यह पुस्तक मूल ग्रन्थ के दृष्टान्तो का संग्रह है और आधुनिक भौतिकवादी समाज के लिए इसका औचित्य और प्रामाणिकता को संपुष्ट करता है| शिव-पार्वती कथा में सन्दर्भ माता सीता की खोज में वन वन भटकते हुए राम के समय से प्रारम्भ होता है |

सीताहरण के पश्चात श्रीराम व्याकुल होकर वन वन भटक रहे थे| इसी समय भगवान शिव ने उनके दर्शन किए परन्तु अपना परिचय नही दिया |

संभु समय तेहि रामहि देखा|

उपजा हियँ अति हरषु बिसेषा||

भरि लोचन छबिसिंधु निहारी|

कुसमय जानि न कीन्हि चिन्हारी||

इसके बाद भगवान शिव माता सती के साथ वापस चल पड़े| भगवान शिव को श्रीराम दर्शन से पुलकित देखकर माता सती के मन में संदेह होने लगा| ये अयोध्या के राजकुमार है, भगवान विष्णु के अवतार है या ब्रह्म के स्वरूप है, जिनसे मिलकर भगवान शिव प्रेम के वशीभूत दिख रहे है| माता भवानी के हृदय

की ऐसी संदेहास्पद अवस्था ,बिना बोले ही भगवान शिव को समझ में आ गई |

जद्यपि प्रगट न कहेऊ भवानी|

हर अंतरजामी सब जानी||

यहाँ माता सती को भवानी कहा गया है| वास्तव में भगवानों के नाम में पर्यायवाची शब्दों की भरमार रहती है| हर पर्यायवाची शब्द देवी या देवताओं की किसी लीला के कारण दिया जाता है| माता सती तपस्या की पर्याय मानी जाती है और भवानी को शक्ति का प्रतीक मानकर युद्ध में उन्मुख माना जाता है| दोनों प्रकृति एक दूसरे से अलग दिखती है| इस स्थिति की आधुनिक व्याख्या इस तरह की जा सकती है कि भगवान शिव वास्तव में कैलास के अधिपति को कहा जाता है| कैलास के हर अधिपति ने अलग अलग कर्मों को पूर्ण

किया और अलग अलग नाम धारण किए, जो भगवान शिव के विभिन्न पर्यायवाची शब्दों के रूप में प्रचलित है| जिसतरह कैलास के अधिपति अनेक हुए, उसीतरह उनकी पत्नी को पार्वती के विभिन्न पर्यायवाची शब्दों के रूप में मान्यता मिली है| यहाँ सती का भवानी के रूप में संबोधन भगवान शिव और पार्वती के अनेक पीढियों के जिक्र के रूप में लिया जा सकता है| वैसे सती का त्रेता युग में होना भी संदेह के दायरे में आता है| वास्तव में माता सती को सतयुग में ध्यान द्वारा भगवान शिव की अर्द्धांगिनी बनने के उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है| इस कालचक्र में संदेह की स्थिति का निवारण श्रीरामचरितमानस में ही कर दिया गया है, जिसकी समीक्षा आगे शिव पार्ती विवाह के समय के सन्दर्भ से की जाएगी| भगवान शिव

ने बार बार माता सती को समझाने की कोशिश की, मगर उन उपदेशों का कोई असर नही दिख रहा था |

लाग न उर उपदेसु

जदपि कहेउ सिवँ बार बहु|

ऐसी विषम परिस्थिति में भगवान शिव ने माता सती से अपने मन का संदेह दूर करने के लिए श्री राम की परीक्षा लेने के लिए कहा | उन्होंने माता सती को अकेले जाकर श्रीराम को परखने की सलाह दी जिससे भ्रम का निवारण हो सके |

आधुनिक सन्दर्भ में यह घटना अनुकरणीय कर्म की ओर इशारा करती है| इस संदर्भ के माध्यम से भगवान शिव ने ये सन्देश भी दिया है कि संदेह या मानसिक अवधारणा में आई विकृति उपदेश से दूर नही होती है| किसी

भी तथ्य की सत्यता या प्रामाणिकता स्थापित करने के लिए उस व्यक्ति को स्वयं कर्म करना पडेगा| यह घटना आज के संदर्भ में भी प्रासंगिक है जहां खुद अनुभव कर सीखने की परंपरा का लोप होता जा रहा है| जो पुस्तकों में है और जिसकी शिक्षक जैसी व्याख्या कर देते है, वही प्रशिक्षु सीखते है| उपदेश द्वारा सीखने की परंपरा से शंकाओं का सीधा निवारण नही संभव होता है| परिस्थिति को अपनी आपबीती बनाने और खुद उसको जीने का एहसास ,संदेहों पर पूर्णविराम के लिए आवश्यक है |

माता सती श्रीराम की परीक्षा लेने उनके पास गई| परन्तु उन्होंने सीता जी का रूप बना लिया| सामान्य परिस्थिति में पत्नी वियोग से व्याकुल व्यक्ति के समक्ष अगर पत्नी की छवि पहुँच जाए, तो परिस्थिति अलग होगी,

पर श्रीराम ने माता सती के सीताजी वाली छवि को प्रणाम कर सर्वप्रथम अपना परिचय दिया और फिर भगवान शिव के बिना अकेले वन में भ्रमण करने का कारण भी पूछा| माता सती संकोच में भरकर अपनी अज्ञानता के प्रदर्शन का संज्ञान लेते हुए हृदय में ग्लानि की भयानक जलन लिए भगवान शिव के पास वापस आ गई| भगवान शिव की बात पर संदेह करने का दुःख, सीताजी का वेश धारण करने की ग्लानि ,श्रीराम का उन्हें पहचानना और वापस भगवान शिव को बताने में लज्जा का बहुआयामी दर्द लिए माता सती वापस गई| रास्ते में उन्हें शांत करने के लिए श्रीराम की कृपा से कई प्रेरक दृश्यों का प्रदर्शन भी उनके मन में आराम नहीं दे पा रहे थे| इन दृश्यों को देखकर वे डरकर रास्ते में ऑखें मूंदकर

बैठ गई और सबकुछ लोप होने पर वापस भगवान शिव के पास पहुंची |

गईं समीप महेस तब

हँसि पूछी कुसलात |

लीन्हि परीछा कवन बिधि

कहहु सत्य सब बात||

भगवान शिव ने हंसकर माता सती से उनकी कुशल क्षेम पूछी और श्रीराम की परीक्षा लेने की विधि बताने के लिए कहा| आत्मग्लानि के कारण माता सती ने झूठ कह दिया| भगवान शिव की बात पर विश्वास करके कोई परीक्षा नही ली गई और भगवान शिव की तरह ही श्री राम को प्रणाम कर वो वापस आ गई है| भगवान शिव ने इसकी सत्यता को ध्यान लगाकर जान लिया पर प्रत्यक्ष में कुछ नही कहा |

तब संकर देखेऊ धरि ध्याना|

सती जो कीन्ह चरित सबु जाना||

बहुरि राममायहि सिरु नावा|

प्रेरि सतिहिं जेहिं झूंठ कहावा||

सीताजी का रूप धारण करने के बाद सती के साथ रहना भगवान शिव ने भक्तिमार्ग में सबसे बड़ी बाधा के रूप में लिया| भगवान शिव श्रीराम के अनन्य भक्त के रूप में स्थापित हुए थे और उनकी अर्धांगिनी का आराध्य की पत्नी का रूप लेना भक्ति में बाधा पैदा कर रहा था| परन्तु उनके मन में दुविधा ये हुई कि सती परम पवित्र है, उन्हें छोड़ना भी असंभव है और प्रेम करना भी पाप के समान है| जानबूझ कर पाप करना भी गलत है और छोड़ने का कोई कारण नही बनता है| भगवान शिव को ये बात स्पष्ट हो

गई कि सती के साथ पति पत्नी के रूप में रहना पाप होगा| ऐसा दृढ़ निर्णय करने के प्रतिक्रियास्वरूप एक आकाशवाणी भगवान शिव के प्रण की प्रशंसा करते हुए हुई|

माता सती ने जब प्रण के बारे में भगवान शिव से पूछा ,तो स्पष्ट उत्तर नही मिला| माता सती को भी ये स्पष्ट हो गया कि भगवान शिव ने मेरा परित्याग कर दिया है| आत्मग्लानि से माता सती का चित्त व्यथित होकर जलने लगा| भगवान शिव ने ये जानकर माता सती को कैलास जाने तक कई रोचक कथाएँ सुनाई| भगवान शिव कैलास पर जाकर बट के पेड़ के नीचे पद्मासन में अपार अखंड समाधि में बैठ गए|

तहँ पुनि संभु समुझि पन आपन|

बैठे बट तर करि कमलासन||

यह विचित्र परिस्थिति थी | माता सती का अपराध, शिव और सती दोनों को ज्ञात था, पर उसपर दोनों ने कभी चर्चा नही की| इस से उत्पन्न स्थिति का निराकरण करने के लिए ली गई शिव की प्रतिज्ञा भी दोनों को ज्ञात थी ,पर ये भी व्यक्त नही की गई| पति पत्नी में इसतरह का तारतम्य अत्यावश्यक है| वास्तव में हर रिश्ते को कायम रखने का मूल मन्त्र यही है| मालूम होने के बावजूद भी प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति के बिना ही अगर दोनों पक्ष एक दूसरे की धारणाओं का सम्मान करे, तो सारे विवाद खत्म हो जाएंगे| वास्तव में इस तरह का समर्पण हर रिश्ते ,हर द्विपक्षीय संबंधों की आधारशिला है| इसके विपरीत आचरण, संबंधों में दरार लाता है| चोर को भी चोर कहने पर वो उत्तेजित हो उठाता है, हिंसक हो जाता है, स्वीकृति नही देता है| आधुनिक

परिपेक्ष्य में आचरण का यह पहलू लुप्त होता जा रहा है |

परन्तु इसका एक दूसरा पहलू भी है |बातचीत कर अपनी बात न कह पाने के कारण शिव और सती दोनों अन्दर ही अन्दर घुट रहे थे| शिव ने समाधि या ध्यान का रास्ता चुना, तो सती ने अपना शरीर छोड़ने की दिशा में प्रार्थना प्रारम्भ की|

तौ मैं बिनय करऊँ कर जोरी|

छूटत बेगि देह यह मोरी ||

स्पष्ट था कि दोनों अपने स्तर पर एक दूसरे को सुख पहुंचाने की कोशिश करते हुए भी अन्दर ही अन्दर जल रहे थे| परन्तु उनके निराकरण का रास्ता भी ऐसा था, जिसका कार्यान्वयन पूर्णत :उनके कर्मों और प्रयासों पर ही निर्भर था| विवादों को अपने स्तर पर

सुलझाने का ऐसा प्रयोग आज की जरूरत है| आतंरिक या मानसिक अस्थिरता व्यक्तिगत उत्पत्ति है और इससे उत्पन्न विचारों की अग्नि को शांत करना भी आवश्यक होता है| इस वैचारिक अग्नि स्रोत का सम्मान कर इसके निराकरण की व्यवस्था बिना दूसरे पक्ष को आहत किए करना आज की आवश्यकता है| माता सती देह त्याग की अभिलाषा के साथ बिना समाधि में गए साधना कर रही थी |और भगवान शिव माता सती के संबंध में दुविधा के कारण समाधि में थे |

बीते संबत सहस सतासी |

तजी समाधि संभु अबिनासी||

सतासी हजार वर्ष बीतने के बाद भगवान शिव ने समाधि तोड़ीये | समय का परिमाण भी अतिश्योक्ति के दायरे में आता है| स्पष्ट है

कि ये अवधि बहुत ज्यादा है| इतनी लम्बी समाधि को आधुनिक दृष्टी से उचित ठहराना थोड़ा मुश्किल है| परन्तु इस सन्दर्भ में मेरा ध्यान सतासी हजार संख्या पर गया| अगर एक दिन में सेकेण्ड के संख्या की गणना करे , तो एक दिन का मतलब चौबीस घंटे, एक घंटे का मतलब साठ मिनट और एक मिनट का अर्थ साठ सेकेण्ड |कुल मिलाकर एक दिन का मतलब है 24x60x60 = 86400 सेकेण्ड ,जो सतासी हजार के निकट है| इसका अर्थ यह हो सकता है कि भगवान शिव ने एक दिन की समाधि लगाई थी|

परन्तु यह व्याख्या मेरी व्यक्तिगत सोच है| इस ग्रन्थ में कई जगह संबत का जिक्र आया है और हर जगह इसका अर्थ सेकेण्ड लगाना नही संभव है| साथ ही सहस शब्द का अर्थ भी हजार लगाना थोड़ी परेशानी खडी कर देता

है| इसलिए सतासी हजार वर्ष के समय को ही सही माना जाता रहा है |

समाधि से जागने के बाद भगवान शिव ने सती को फिर से रोचक कथाएँ कहना प्रारम्भ किया| उसी समय आकाश मार्ग से जाते हुए देवताओं के विमानों को देखकर सती ने उनके संबंध में प्रश्न किया| शिव ने बताया कि सती के पिता दक्ष ने यज्ञ का अनुष्ठान किया है| सभी देवता उसमें ही जा रहें है| सती ने पिता के यहाँ होनेवाले यज्ञ में जाने की इच्छा जाहिर की| भगवान शिव ने न्योता के बिना जाने को अनुचित करार दिया | इससे शील,स्नेह- मान मर्यादा का हरण होने की बात भी उन्होंने कही| उन्होंने ये भी बताया कि मित्र, स्वामी, पिता और गुरु के यहाँ बिना बुलाए भी जाया जा सकता है| परन्तु दक्ष ने वैर पाल रखा है और विरोध के कारण बिना न्योता के जाना सही

नही है| बहुत अनुनय विनय के बाद भगवान शिव ने सती के अनुरोध को स्वीकार किया और उन्हें पिटा दक्ष के यहाँ यज्ञ में जाने की अनुमति दे दी| परन्तु वहां जाने के बाद स्वागत का अभाव तथा भगवान शिव के अपमान को देखते हुए, सती को क्रोध आ गया| उन्होंने शिव के अपमान को अनुचित कहते हुए, सभी उपस्थित देवताओं और ऋषियों की भर्त्सना की तथा दक्ष द्वारा दिए गए शरीर को परित्याग करने के लिए योगाग्नि में प्रवेश कर लिया |

यदि होनी पर भरोसा किया जाए, तो इच्छित परिस्थिति स्वयं बन जाती है| शिव दुविधा में थे कि सती का परित्याग करना भी गलत था और स्वीकार करना भी गलत था| सती अपना शरीर त्याग देना चाहतीं थी| सती का योगाग्नि में प्रवेश दोनों के दुविधा की समाप्ति के रूप

में देखा जा सकता है| इस उदाहरण से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि नियति ऐसा पथ निकालती है, जिससे हर संकट का निवारण संभव है| इसलिए भवितव्य पर भरोसा करना चाहिए| प्रयासरत होना जरूरी है| घटनाएं स्वाभाविक रूप से सही मोड़ लेती है| उनसे सबका कल्याण होता है |

इसके बाद माता सती ने पर्वराज हिमाचल के यहाँ जन्म लिया| उनकी पार्वती संज्ञा हुई और नारद मुनि ने पार्वती के भाग्य और भविष्य का वर्णन हिमालय को किया था| उन्होंने पार्वती को सब गुणों की खान, सुन्दर, सुशील, समझदार और सुलच्छनी कहा| परन्तु उनके भाग्य के अवगुण बताते हुए उन्होंने उनके पति के संबंध में विचित्र जानकारी दी|

सैल सुलच्छन सुता तुम्हारी|

एहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं||

अगुन अमान मातु पितु हीना|

उदासीन सब संसय छीना||

जोगी जटिल अकाम मन

नगन अमंगल बेष |

अस स्वामी एहि कहँ मिलिहि

परी हस्त असि रेख||

पार्वती को मिलने वाले पति का सन्दर्भ ऐसा बताया गया -गुणहीन, मानहीन, मातापिता-हीन, उदासीन, संशयहीन ,योगी, जटाधारी, निष्कामहृदयनंगा , और अमंगल वेषवाला | साथ ही नारद मुनि ने यह भी बतलाया कि इन सारे गुणों को धारण करने वाले सिर्फ भगवान शिव ही है| यह सुनकर, पार्वती ने दृढ़ निश्चय कर लिया| भगवान शिव को पुन:

प्राप्त करना ही उनके जीवन का एकमात्र ध्येय हो गया| पार्वती की तपस्या में पुन: समय के सन्दर्भ में संकोच होता है |

संबत सहस मूल फल खाए |

सागु खाई सत बरष गवाँए||

कछु दिन भोजन बारि बतासा|

किए कठिन कछु दिन उपबासा||

बेल पाती माहि परइ सुखाई|

तीनि सहस संबत सोइ खाई||

पुनि परिहरे सुखानेउ परना|

उमहि नामु तब भयउ अपरना||

संबत सहस का अर्थ हजार वर्ष लेना ही उपयुक्त लगता है, क्योंकि हजार सेकेण्ड का समय तो सिर्फ सोलह से सत्रह मिनट के बीच

का समय ही होता है| तो हजार वर्ष तक उन्होंने मूल (जड़) और फल खाए| सत की व्याख्या भी आनुपातिक रूप से सौ के रूप में लेना सही प्रतीत होता है| सौ वर्षों तक उन्होंने साग पेड़ों) की पत्तियां(खाया| कुछ दिन भोजन छोड़कर सिर्फ जल और वायु का सेवन किया | फिर कुछ दिन और कठिन उपवास रखा| अगले तीन हजार वर्ष तक उन्होंने गिरे हुए बेलपत्र खाकर गुजारे| फिर सूखे पत्ते भी छोड़ा दिए और अपर्णा नाम धारण किया |

इसके बाद आकाशवाणी हुई कि उनकी तपस्या पूर्ण हुई| सती के वियोग में भगवान शिव दग्ध थे पर वे धरती पर मुनियों को उपदेश और कथा सुनाने का कार्य करते रहे थे| देवताओं को महाबली राक्षस तारकासुर को मारने के लिए शिव पुत्र की आवश्यकता थी| और शिव-पार्वती का विवाह होना जरूरी था|

तो उन्होंने ईश्वर की इच्छा का सम्मान करते हुए पार्वती से विवाह का संकल्प लिया| भगवान शिव उस समय समाधि में बैठे थे और उसे भंग करने के लिए कामदेव को आज्ञा दी गई, जिससे शिव के विवाह को अंजाम दिया जा सके| कामदेव ने दूर से बहुत कोशिश की पर शिव समाधि को भाग करने में असमर्थ रहे| तब उन्होंने अपने पुष्प धनुष से पांच बाण छोड़े, जिनके आघात से शिव की समाधि टूट गई| पर इससे शिव क्रुद्ध हो गए और अपने तीसरे नेत्र को खोला| इसके प्रभाव से कामदेव भस्म होकर अनंग हो गए |

तब सिवँ तीसर नयन उघारा|

चितवन कामु भयउ जरि छारा||

शिव के समाधि से बाहर आने पर पार्वती संग उनके विवाह के लिए देवताओं ने अनुरोध

किया| शिव जी अनुमति दी, तो शुभ मुहूर्त में उनका विवाह पार्वती के साथ संपन्न हो गया| विवाह के समय सर्वप्रथम शिव और पार्वती ने गणेशजी का पूजन किया |

मुनि अनुसासन गनपतिहि

पूजेउ संभु भवानि|

कोउ सुनि संसय करै

जनि सुर अनादि जियँ जानि||

रामचरितमानस में शिव पार्वती ने विवाह से पूर्व अपने पुत्र गणपति का पूजन किया था| इसमें उपस्थित द्वन्द का समाधान करते हुए यह कहा गया है कि देवता अनादि होते है| उनका आरम्भ नही होता है, बल्कि वे हर काल में विद्यमान रहते है| इसलिए भगवान गणपति की उपस्थिति उस समय भी थी जब शिव पार्वती की शादी नहीं हुई थी| यह मेरी

लिखी उस अवधारणा को पुष्ट करता है कि कैलास के अधिपति शिव होते थे| और हर समय कोई न कोई कैलास का अधिपति उपस्थित रहता ही था| उसीतरह उनकी संतान को गणपति कहते थे और वो हर काल में उपस्थित रहे थे|

शिव,पार्वती के विवाह के पश्चात- वे दोनों कैलास पर चले गए| उनसे छः मुखवाले पुत्र कार्तिकेय का जन्म हुआ, जिसने कालान्तर में युद्ध कर तारकासुर को मारा |

श्रीराम अवतरण प्रयोजन

रामचरितमानस त्रेता युग का वर्णन करता है और श्रीमद्भागवतगीता का काल द्वापर माना गया है| परन्तु, रामचरितमानस में उन सभी तर्कों का समावेश मिलता है, जिन्हें श्रीमद्भागवतगीता के कारण प्रसिद्धि मिली है |रामचरितमानस की उन चौपाइयों को उद्धृत करना चाहूँगा, जिसमें श्रीमद्भागवतगीता के समान भाव प्रकट हुए है| गुणी पाठकों से समानता स्थापित करने की गुजारिश करता हूँ|

जब जब होइ धरम कै हानि|

बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी||

करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी |

सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी||

तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा |

हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा||

इन चौपाइयो में प्रभु के अवतार लेने का कारण स्पष्ट किया गया है| जब जब धर्म कुंठित होता है, जब जब अधर्म और अभिमानी असुर बढ़ जाते है, जब वे वर्णनातीत अन्याय करते है, तथा जब ब्राह्मण, गाय, देवता और पृथ्वी उनसे कष्ट पाते है, तब तब प्रभु विभिन्न शरीर धारण कर सज्जनों की पीड़ा हरते है| इसीतरह के अर्थ के साथ श्रीमद्भागवतगीता के सन्दर्भ नीचे है |

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत|

अभ्युत्थानं धर्मस्य तदात्मानं सृजम्यहं||

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम|

धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे||

इसका अर्थ है - जब जब धर्म की क्षति होती है, तो धर्म के उत्थान के लिएमेरा , सृजन होता है| सज्जनों के कल्याण के लिए, दुश्कर्मो के विनाश के लिए, मै हर युग में संभव हूँ |

यह भगवान श्रीकृष्ण ने अपने अवतार लेने के कारण को समझाते हुए कहा है| मूल अर्थ की दृष्टि से दोनों एक ही तरह के अर्थ प्रतिपादित करते है| अंतर सिर्फ वक्ता का है| रामचरितमानस में प्रभु के अवतार लेने की बात भगवान शिव कर रहे है ,तथा इस बात को स्पष्ट करके कहते है कि ये उनकी सम्मति है, उनका मत है " -**तस मैं सुमुखि सुनावउ तोही| समुझि परइ जस कारन मोही**"||

इसीतरह की एक अन्य प्रकार की एकरूपता दिखाती है - भगवान के विराट रूप के दर्शन

में| त्रेता में श्रीराम ने अपनी माता को विराट रूप के दर्शन कराए थे तो द्‍वापर में कुरुक्षेत्र के मैदान में भी भगवान का विराट रूप प्रगट हुआ था| दोनों के विराट रूप का वर्णन काफी मिलता जुलता है| श्रीरामचरितमानस में वर्णन इस प्रकार है -

देखरावा मातहि निज अद्‍भुत रूप अखंड|

रोम रोम प्रति लगे कोटि कोटि ब्रह्मंड||

अगनित रबि ससि सिव चतुरानन |

बहु गिरी सरित सिन्धु महि कानन||

काल कर्म गुन ग्यान सुभाऊ|

सोउ देखा जो सूना न काऊ||

देखी माया सब बिधि गाढी |

अति सभीत जोरें कर ठाढी||

देखा जीव नचावइ जाहि|

देखी भगति जो छोरइ ताहि||

इसी तरह श्रीमद्भागवतगीता में भी भगवान के विराट रूप का विस्तृत विवरण उपलब्ध है |

श्रीराम जन्म के कई कारण है| हर कारण की घटना विचित्र है, श्रव्य है, रोचक है| भक्तो को इससे अनुपम सुख मिलता है| मुख्य कारण के रूप में राक्षस रावण को लिया जा सकता है| उसने पूरी धरती को परेशान कर रखा था| उसका भाई कुंभकर्ण भी उत्पात फैलाने में रावण के सामान ही आतताई था| पर रावण के पूर्व जन्म की कथाएँ भी पठनीय है| कुछ कारण थे जिससे वो इतना ताकतवर बन पाया था| उसकी ताकत का राज उन पूर्व जन्म की घटनाओं में छिपा था जिसके कारण खुद

भगवन को उससे छुटकारा दिलाने के लिए धरती पर अवतरित होना पडा |

कथा है कि भगवान विष्णु के दो प्रिय द्वारपाल थे - जय और विजय| सनकादि ऋषियों और ब्राह्मणों का निरादर करने के कारण उन्हें शाप मिला था कि वे अगले तीन जन्मों तक पृथ्वी पर आते रहेगे, और हर बार भगवान विष्णु अवतार लेकर उनका वध करेंगे| उनका पहला जन्म था -हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु के रूप में |

द्वारपाल हरी के प्रिय दोऊ|

जय अरु बिजय जान सब कोऊ||

बिप्र श्राप ते दूनउ भाई|

तामस असुर देह तिन्ह पाई||

वे महान पराक्रमी थे| देवराज इंद्र को पराजित कर जगत में प्रसिद्ध हुए| हिरण्याक्ष ने धरती को पाताल में छिपा दिया, तब उसका वध कर पृथ्वी को पुन: स्थापित करने के लिए वाराह अवतार का प्रादुर्भाव हुआ| इसीतरह, हिरण्यकशिपु को मारकर भक्त प्रहलाद को सत्ता सौंपने के उद्देश्य से भगवान विष्णु ने नरसिंह अवतार लिया| वैसे तो भगवान विष्णु के हाथों मरने के कारण, उन दोनों को पुन: जन्म से छुटकारा मिल जाना था, पर ब्राह्मणों का शाप उन्हें तीन बार धरती पर जन्म लेने का था| वे ही दोनों अगले जन्म में महान योद्धा रावण और कुंभकर्ण नामक राक्षस हुए| उनको मारने के लिए भगवान विष्णु को पुन: अवतार लेने की आवश्यकता थी, जो श्रीराम के जन्म से पूर्ण हुआ |

भए निसाचर जाइ तेइ

महाबीर बलवान|

कुंभकरन रावन सुभट

सुर बिजई जग जान||

ऐसा नही है कि सिर्फ रावण और कुंभकर्ण को मारने के लिए ही भगवान का श्रीरामावतार हुआ था| एक अन्य कथा के अनुसार कैकय देश में सत्यकेतु नामक राजा हुआ था| उसके दो पुत्र प्रतापभानु और अरिमर्दन हुए| कालांतर में प्रतापभानु राजा हुआ और उसने पूरे राज्य में धर्म की स्थापना कर दी| पूरी पृथ्वी को अपने बाहुबल से जीत लिया और चक्रवर्ती सम्राट बन गया| उसका मंत्री धर्मरुची था, जिसने राजा प्रतापभानु को राज काज में पूर्ण सहयोग दिया| दान, धर्म, वेद, रीति ,समृद्धि , भाग्य की स्थापना उसके राज्य में हो गई| पर एक हारे हुए राजा के छल के कारण, ब्राह्मणों

ने राजा को धर्मभ्रष्ट का दोषी करार देते हुए एक वर्ष के अन्दर परिवार सहित नष्ट होने और अगले जन्म में राक्षस होने का शाप दे दिया |द्वापर युग में वही प्रतापभानु रावण के रूप में पैदा हुआ| उसका छोटा भाई अरिमर्दन कुंभकर्ण हुआ और मंत्री धर्मरुची, विभीषण हुआ |

रावण और कुंभकर्ण का जन्म कई प्रकार के पुनर्जन्म के रूप में वर्णित है -भगवान विष्णु के द्वारपाल जय-विजय के रूप में, महान प्रतापी राजा प्रतापभानु और अरिमर्दन के रूप में, या जलंधर के रूप में (इसका जिक्र इसी अध्याय में आजगे है) | इन दृष्टान्तो से यह स्पष्ट है कि रावण पूर्व जन्म में भी पराक्रमी था, और किसी शाप के कारण उसे राक्षस योनी में जन्म लेना पडा| फिर इतने पराक्रमी

से धरती का छुटकारा तो भगवान का कोई अवतार ही दिला सकता है |

जैसा शिव-पार्वती कथा वाले अध्याय में द्रष्टव्य है कि नियति या होनी इसतरह घटित होती है कि हर प्रभाव का निराकरण, हर समस्या का समाधान संभव हो जाता है| इसलिए, इन दोनों के साथ साथ भगवान विष्णु के अवतार ग्रहण की अनिवार्यता भी अन्य कारणों से अवश्यंभावी थी |

कश्यप और अदिति को देवताओं के माता - पिता कहा जाता है| पर ये पिछले जन्मों की घटना या दृष्टांत थे| त्रेता में उन दोनों ने महाराज दशरथ और महारानी कौशल्या के रूप में जन्म लिया था| उनसे अवतार को लेकर त्रेता युग में लीला करना एक घटनाक्रम बन गया था |

कस्यप अदिति तहां पितु माता|

दसरथ कौसल्या बिख्याता||

एक अन्य स्थान पर इस बात को पुन: आकाशवाणी के माध्यम से भी संपुष्ट किया गया है| जब रावण का अत्याचार धरती के लिए बोझ बन गया और देवताओं को उससे बचने और बचाने का कोई मार्ग नही मिल रहा था, तब श्रीराम के अवतार लेने की आकाशवाणी हुई|

कस्यप अदिति महातप कीन्हा|

तिन्ह कहुं मै पूरब बर दीन्हा||

ते दसरथ कौसल्या रूपा|

कोसलपुरी प्रगट नर भूपा||

माता पिता की उपस्थिति संतान के रूप में भगवान को स्थापित करने के लिए पूर्ण

आवश्यकता नही थी| श्रीराम के मातापिता- के औचित्य को स्थापित करती एक और कथा का जिक्र आता है|

मनुष्यों की सृष्टि जिनसे हुई, उन स्वयंभुव मनु और उनकी पत्नी शतरूपा ने नैमिषारण्य में भगवान के दर्शन की इच्छा से तपस्या आरम्भ की| इसके पहले उन्होंने अपने सांसारिक दायित्वों का भली भाँति निर्वाह कर लिया था| बहुत भीषण तपस्या के बाद जब भगवान के दर्शन हुए, तो उन्होंने उनके सामान पुत्र पाने की अभिलाषा जाहिर की|

दानि सिरोमनि कृपानिधि

नाथ कहउँ सतिभाउ|

चाहउँ तुम्हहि समान सुत

प्रभु सन कवन दुराउ||

ऐसी अभिलाषा सुनकर भगवान विष्णु ने कहा मैं अपने सामान दूसरा कहाँ खोजूँ ?अत: स्वयं आकर तुम्हारा पुत्र बनूंगा ”|

आपु सरिस खोजौ कहँ जाई|

नृप तव ताने होब मै आई||

साथ ही भगवान ने यह भी कहा कि कालांतर में जब आप अवध के राजा बनेगे, तब मै आपका पुत्र बनूँगा| इसतरह माता-पिता का प्रावधान तो इन वरदानो के द्वारा संभव हो रहा था | माता, पिता और पुत्र सबको इस वरगान के माध्यम से भवितव ने प्रारब्ध कर रखा था|

प्राचीन काल की एक कथा में जलंधर नामक एक दैत्य ने देवताओं को परास्त कर दिया और भगवान शिव से भी घनघोर युद्ध करने

के बाद भी वो परास्त नही हो रहा थामर , नहीं रहा था |

संभु कीन्ह संग्राम अपारा|

दनुज महाबल मरइ न मारा|

दैत्य की अमरता का श्रेय उसकी पत्नी की पवित्रता और भक्ति को माना गया| इसलिए , जलंधर की मृत्यु के लिए उसकी पत्नी की पवित्रता को खंडित करना आवश्यक हो गया| तब भगवान विष्णु ने छल से उस स्त्री का व्रत भंग किया |तब उस पतिव्रता स्त्री ने भगवान को शाप दिया कि उन्हें धरती पर अवतरित होकर स्त्री वियोग का कष्ट झेलना होगा| भगवान ने इसे स्वीकार किया| यही श्रीराम के जीवनवृत्त की आधारशीला मानी जाती है| जन्म के साथ साथ उनके जीवन की घटनाएं भी इस तरह के शापों के कारण स्पष्ट

होती जा रही थी| यह भी कहा जाता है कि रावण जलंधर का ही पुनर्जन्म था ,जिसकी पुन: भगवान विष्णु के अवतार के हाथो मृत्यु लिखी थी| इस शाप की भरपाई के लिए भगवान श्रीराम का जन्म हुआ |

इसीतरह एक अन्य कथा भी है, जिसके अनुसार देवर्षि नारद को कामदेव पर विजय का मिथ्या अभिमान हो गया था| उससे छुटकारा दिलाने के लिए भगवान विष्णु ने एक मायानगरी का निर्माण नारद मुनि के भ्रमण पथ पर किया| वहां की राजकुमारी का स्वयंवर नारद मुनि के सम्मुख होने लगा| कन्या की सुन्दरता देखकर नारद मुनि की इच्छा उस कन्या से विवाह करने की हुई| परन्तु आए हुए राजाओं की सुन्दरता और उनके पराक्रम को देखते हुए, उन्हें अपने इष्ट देव भगवान विष्णु का स्मरण हो आया|

उन्होंने अराधना की और दर्शन देने पर भगवान् विष्णु से उनके जैसा रूप माँगा|

आपन रूप देहु प्रभु मोही|

आन भांति नही पावौं ओही|

वास्तव में नारद मुनि ने हरि का रूप माँगा था| पर हरि का एक अर्थ वानर भी होता है| भगवान विष्णु ने उन्हें वानर का मुख दे दिया| भगवान विष्णु भी राजा के वेश में स्वयंवर में उपस्थित थे| उस राजकन्या ने भगवान विष्णु के गले में वरमाला डाल दी और नारद मुनि को बहुत व्याकुलता हुई| बाद में किसी के कहने पर जब उन्होंने जल में अपना प्रतिबिम्ब देखा ,तो उन्हें असलियत पता चली और वे भगवान विष्णु पर क्रोधित हो गए| कामदेव पर विजय की बात ताक पर रखकर नारद मुनि काम के अधीन हो गए| वे भगवान विष्णु

के पास पहुंचे और शाप दे दिया -जिस मानव शरीर को धारण करके आपने मुझे ठगा है , आप भी वही शरीर धारण करो| जब आप मानव शरीर धारण करोगे ,तो जिस वानर की छवि आपने मुझे दी है, उसी की सहायता आपको लेनी पड़ेगी| साथ ही जैसे स्त्री के विरह में मै तड़पा हूँ ,आप भी स्त्री के वियोग में दुखी होगे|

बंचेहु मोहि जवानी धरि देहा|

सोइ तनु धरहु श्राप मम एहा||

कपि आकृति तुम्ह कीन्हि भारी|

करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी||

मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी|

नारी बिरहँ तुम्ह होब दुखारी||

शाप को पुन: भगवान ने स्वीकार किया| कुल मिलाकर हरेक शाप की परिणति ऐसी हो रही थी कि भगवान विष्णु का अवतार होगा| इन शापों के द्वारा जीवन में घटित घटनाओं की झलक भी मिल रही थी |

वास्तव में रावण और श्रीराम दोनों को धरती पर लाने का कारण शाप थे| इन शापों ने ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी कि एक महान बलशाली राक्षस का धरती पर विचरण होगा, जिससे मानव और देवता दोनों त्रस्त होंगे| उनके अत्याचार से मुक्ति के लिए पृथ्वी पर भगवान श्रीराम का अवतरण होगा| उन्हें पत्नी वियोग झेलना होगा| उन्हें वानरों की सहायता लेनी पड़ेगी |इसतरह भगवान श्रीराम के अवतार लेने की भूमिका बहुत पहले से बन रही थी| अंत में चैत मास की शुक्ल पक्ष

नवमी को भगवान श्रीराम ने धरती पर अवतार लिया |

इसतरह कुल मिलाकर श्रीराम के जन्म की व्यवस्था प्रकृति बहुत पहले से कर रही थी| स्पष्ट है कि इसमें विभिन्न अवसरों पर मिलने वाले शाप ज्यादा मायने रखते है| विडम्बना ये है कि राम और रावण दोनों के जन्म शाप के कारण ही हुए है| रावण अति पराक्रमी था, क्योंकि वो पूर्व जन्म में भी शक्तिशाली था और भगवान का अवतार लेने का कारण बनाने के लिए उसे मानव और देवताओ से ज्यादा शक्तिशाली तो होना ही था| इसके विपरीत भगवान ने भी अवतार लेने का प्रयोजन विभिन्न शापों के माध्यम से तय कर रखा था| वरदान की बात आती है ,तो मनु और शतरूपा जो क्रमश: देवताओं के मातापि-ता अदिति और कश्यप के पुनर्जन्म थे का जिक्र

जरूरी है| इनको भगवान ने पुत्र रूप में जन्म लेने का वरदान दिया था, इससे भगवान के अवतरण की पृष्ठभूमि मानी जा सकती है |

संख्यात्मक सन्दर्भ

हर सन्दर्भ में कुछ प्रकार, कुछ किस्में होतीं है| रामचरित मानस में भी ऐसे सन्दर्भ मिलते हैं, जहां विभिन्न भावो ,संज्ञाओं और अनुभूतियों का वर्गीकरण किया गया| प्रस्तुत अध्याय, रामचरितमानस में वर्णित उन्ही वर्गीकरणों का संग्रह है| इसमें नीति है, कुछ द्रष्टव्य उदाहरण है, कुछ विलुप्त होती परंपरा की छवि है, कुछ अलग माधुरी है| इन वर्गीकृत इकाइयों का औचित्य आज भी घटा नही है| आज भी वे उतने ही प्रासंगिक है| इस अध्याय को संख्या के बढ़ते हुए क्रम में लगाया है| न्यूनतम संख्या दो है क्योंकि दो से कम को वर्गीकरण नहीं कहते है| हर उद्धरण के पहले रामचरित मानस की चौपाई दी जाएगी और

फिर उसका वर्गीकरण वाला भाग प्रस्तुत होगा |

संख्या दो

अगुन सगुन दुई ब्रह्म सरूपा|

अकथ अगाध अनादी अनूपा||

ब्रह्म के दो स्वरूप हैं -निर्गुण और सगुण | निर्गुण ब्रह्म का कोई आकार, प्रकार, आकृति नही होती है| वे निराकार है, परब्रह्म है| इसके विपरीत सगुन ब्रह्म दर्शनीय होते है, प्रत्यक्ष होते है, उनकी एक छवि होती है, वे दिखते है, तथा उनकी कुछ लीलाएं होती है| रामचरित मानस में इस बात पर बल दिया गया है कि राम का नाम लेना दोनों प्रकार के ब्रह्मों को समझाने से ज्यादा सरल है| साथ ही यह भी

समझाया गया है कि तत्वत रूप में दोनों एक ही है|

अगुन अरूप अलख अज जोई|

भगत प्रेम बस सगुन सो होई||

जो निर्गुण, निराकार अव्यक्त ,और अजन्मा है, वही भक्तो के प्रेमवश सगुन हो जाता है| इसको समझाने के लिए यह भी कहा गया है कि ओले और जल में कोई भेद नहीं है |

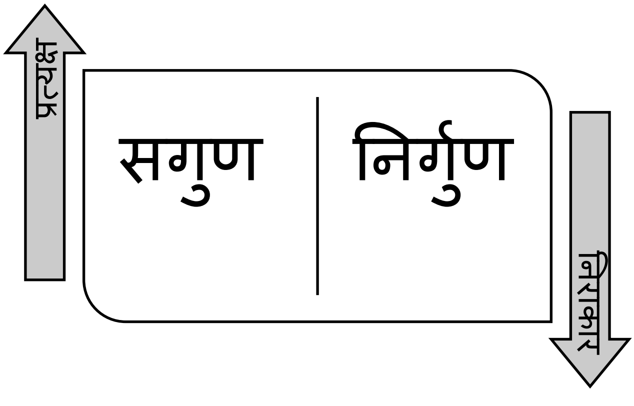

संख्या तीन

त्रिबिध समीर सुसीतलि छाया| सिव बिश्राम बिटप श्रुति गाया|

इनमें कैलास पर्वत पर स्थित विशाल बरगद के पेड़ के बारे में चर्चा की गई है| वहां तीन प्रकार की वायु बहती है तथा उसकी छाया शीतल होती है| इसके नीचे ही शिव विश्राम करते है, ऐसा प्रचलित है| इसमें वर्णित तीन प्रकार के पवन है- शीतल, मंद और सुगंध| हवा की इस विभेद द्वारा यह भी स्पष्ट है कि इन तीनों के विपरीत भी हवा की प्रकृति संभव है, जो सर्वथा प्रतिकूल होती है| ऊष्ण , तीव्र और दुर्गन्धयुक्त हवा की चाहत किसी को नही होती है |

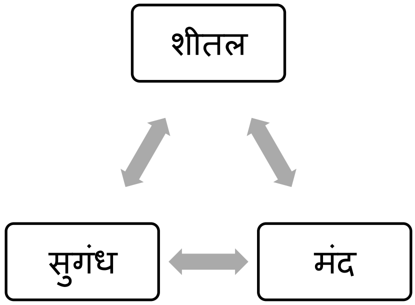

तडित बिनिंदक पीत पट उदर रेख बर तीनि|

पेट पर सौन्दर्य के प्रतीक के रूप में बने वाली तिन रेखाओं का जिक्र श्रीरामचरितमानस में कई स्थानों पर है| जैसे आजकल सिक्स पैक बताने का प्रचलन है, वैसे ही उदर पर बनाने वाली तीन रेखाओं को त्रिवली कहा जाता है| इसका उपयोग भगवान की मनोहर छवि को दर्शाने के लिए कई बार आया है| ऊपर का सन्दर्भ भगवान के स्वयंभुव मनु और उनकी पत्नी शतरूपा को दर्शन देने वाले अलौकिक छवि के वर्णन का है |

त्रिभुवन तीनि काल जग माहीं|

भूरिभाग दसरथ सम नाहीं||

इनमें जिन तीन भुवन या लोको का जिक्र है, वे है पृथ्वी, आकाश ,और पाताल| पृथ्वी धरती की ओर संकेत करती है ,जिसमें जमीन और जलमंडल दोनों आते है| आकाश अंतरिक्ष और वायुमंडल के संयोग से संभव है| पाताल भूगर्भ को इंगित करता है| इन्ही पंक्तियों में समय के तीन भाग भूत, वर्त्तमान और भविष्य की ओर भी इशारा किया गया है| काल का ये विभाजन आज भी मायने रखता है |

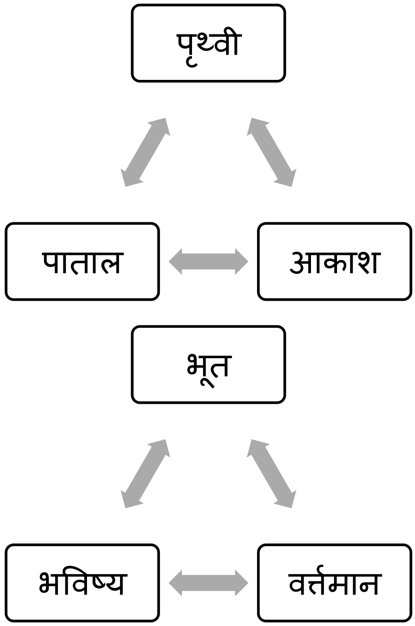

पावन पयं तिहुँ काल नहाहीं|

जो बिलोकि अघ ओघ नसाहीं||

इन पंक्तियों में दिन के तीन काल या समय का जिक्र है ,जो सवेरे ,दोपहर और शाम को बतलाते है| इन तीन समय पर स्नान की परम्परा है |

बिषई साधक सिद्ध सयाने|

त्रिबिध जीव जग बेद बखाने||

इसमें आदर पाने के लिए राम नाम का गुणगान किया गया है| वेदों के अनुसार तीन प्रकार के जीव इस दुनिया में है| पर जो भी राम नाम का मन से जाप करता है ,वो तर जाता है| ये तीन प्रकार है - विषयी, साधक और ज्ञानी सिद्ध| इन पंक्तियों में मूल प्रकृति से ज्यादा कर्म पर बल दिया गया है|

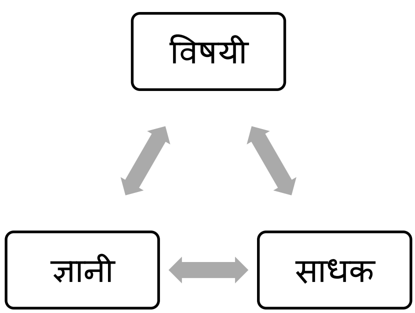

तात तीनि अति प्रबल खल

काम क्रोध अरु लोभ|

मुनि बिग्यान धाम मन

करहिं निमिष महुन् छोभ||

मन को प्रभावित करने वाले कारकों का प्रभु श्रीराम ने वर्णन किया है| उन्होंने कहा है कि काम, क्रोध और लोभ मन के सबसे बड़े शत्रु होते है| यही हमेशा जीव को मार्ग से भटका देते है| इसके साथ साथ उन्होंने इन कारको को पोषित करने वाले कारण भी बताए है| काम को स्त्री प्रभावित करती है| क्रोध हमेशा कठोर वचनों से उत्पन्न होता है| लोभ की उत्पत्ति में इच्छा और दंभ का महत्त्व होता है| इसलिए जीवन में सफलता हेतु इनपर नियंत्रण आज के युग की भी आवश्यकता है|

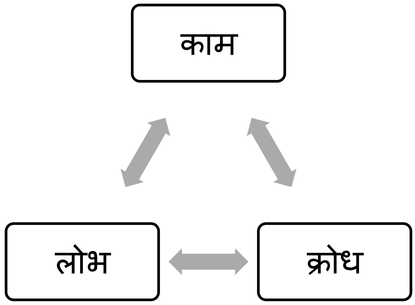

सचिव बैद गुर तीनि जौ

प्रिय बोलहिं भय आस|

राज धर्म तन तीनि कर

होइ बेगिहीं नास||

रावण के मतिभ्रम के संबंध में और हाँ में हाँ मिलाने वाले सभासदों पर ये कटाक्ष था| इनमें विनाश की पृष्ठभूमि तय की गई है| यदि भय हावी हो जाए और सत्य संभाषण के बदले प्रिय वचन प्रस्तुत होने लगे तो विनाश निश्चित है| अगर मंत्री प्रिय बोलने लगे, तो

राज्य नष्ट हो जाता है| अगर वैद्य प्रिय बोलने लगे, यथार्थ से अलग बात करे, तो शरीर का नाश हो जाता है| अगर गुरू भय से सही न बोलकर प्रिय वचन बोलना प्रारम्भ कर दे तो धर्म का लोप हो जाता है |

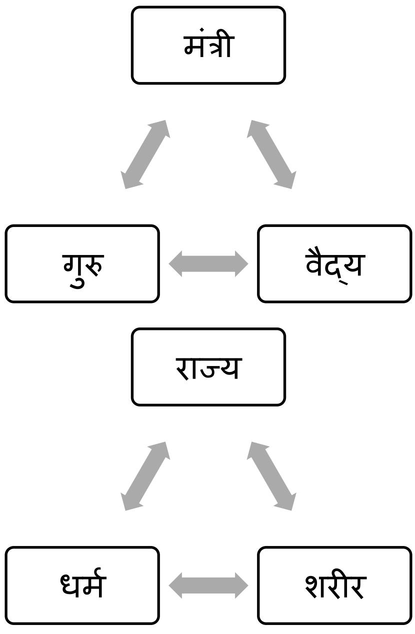

सो धन धान्य प्रथम गति जाकी|

धन्य पुन्य रत मति सोइ पाकी||

इन पंक्तियों में धन के तीन उपयोग या प्रयोग बताए गए है और कहा गया है कि पहली गति से ही धन का मान बढ़ता है| धन की ये तीन गतियाँ है - दान, भोग और नाश| अगर धन का उपयोग दान के लिए किया जाता है, तो ये उसका सदुपयोग है| इसीतरह बुद्धि तभी धन्य होती है जब वो परिपक्व है ,पुण्य कार्य में लगी है |

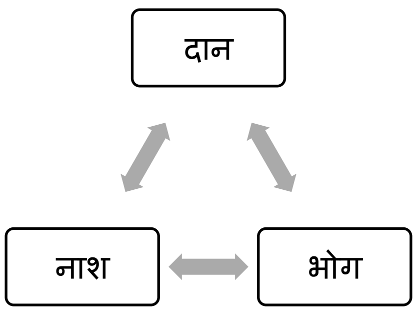

संख्या चार

राम भगत जग चारि प्रकार|

सुकृति चारिउ अनघ उदारा||

राम के भक्त चार प्रकार के होते है और चारो पुण्यात्मा, पापरहित और उदार होते है| पहला भक्त है अर्थार्थी ,जो राम की अराधना धन-संपत्ति ऐश्वर्य की इच्छा से करते है| यह एक अल्पकालिक भाव है और धन की लालसा समाप्त होने पर इस भक्ति में ह्रास हो सकता है| दूसरा भक्त आर्त होता है, जो राम की भक्ति किसी संकट से निकलने के लिए करता है| ये भक्ति भी संकट की उपस्थिति और भक्त के वातावरण की समझ द्वारा नियंत्रित होती है| तीसरे प्रकार का भक्त होता है जिज्ञासु| ये भक्त राम को जानने के लिए भक्त बनता है| चुकि हरी अनंत ,हरी कथा अनन्ता कहा जाता है, इसलिए जानने के लिए एक जीवन तो बहुत कम होता है| ये भक्त जीवन भर राम को जानने की कोशिश में भक्त बने रहते है| चौथे प्रकार के भक्त हैं

ज्ञानी| ये भक्त स्वाभाविक रूप से भक्त होते है, क्योकि इन्हें राम नाम के तत्व का ज्ञान होता है| और ये प्रेम के वशीभूत होकर भक्ति करते है| राम की नजरो में अर्थाथी, आर्त , जिज्ञासु और ज्ञानी , चारों एक सामान होते है |

चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका|

भए नाम जपि जीव बिसोका||

इस चौपाई में अलग अलग संख्याएं दिख रही है, पर इसे चार की श्रेणी में रखा गया है|

चार युग, तीन काल और तीनों लोकों में नाम जपकर ही जीव शोकरहित हुए है| चार युगों के नाम है - सत युग, त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग |तीन काल है - भूत, वर्तामान और भविष्य |तीन लोक है - भू लोक, पाताल लोक, आकाश लोक |

ध्यानु प्रथम जगमख बिधि दूजें|

द्वापर परितोषत पभु पूजें||

रामनाम कलि अभिमत दाता|

हित परलोक लोक पितु माता||

ये चौपाइयां एक साथ नही है, पर अर्थ और वर्गीकरण को एक स्थान पर बताने के लिए उन्हें साथ साथ प्रस्तुत किया गया है| हर युग में ईश्वर को प्रसन्न करने का मापदंड अलग अलग होता है| युग के हिसाब से इनका प्रयोग आवश्यक है| सतयुग में ईश्वर, ध्यान से प्रसन्न होते थे| इसलिए उस समय तपस्या का महत्व था| तपस्या द्वारा मनवांछित फल प्राप्त करने के कई दृष्टांत भारतीय पौराणिक ग्रंथों में उपलब्ध है| इस युग में ईश्वर को प्राप्त करने की योग्यता मानव, दानव, गंधर्व, स्त्री, देव, पशु, पक्षी आदि सभी को उपलब्ध थी| दूसरे युग में यज्ञ को भगवान को प्रसन्न करने के लिए प्रयोग में लाया जाने लगा| अश्वमेध यज्ञ, बाजपेय यज्ञ, आदि की उत्पत्ति इस काल में मानी जा सकती है| साथ ही यह भी माना जा सकता है कि इस युग में ईश्वर

की प्रसन्नता को राजाओं तथा ऋषियों तक सीमित कर दिया गया था| तपस्या का कुछ हद तक प्रभाव इस युग में बरकारार रहा ,पर धीरे धीरे ये लुप्त हो गई| तीसरे युग में पूजन का महत्त्व बढ़ा| ईश्वर को जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए यज्ञ के ऊपर पूजन को महत्त्व दिया गया| इससे पुन: ईश्वर की प्राप्ति में सभी सजीवों को सुविधा हो गई| चौथे युग अर्थात कलियुग में राम नाम का जाप ही ईच्छित फल देने वाला है| यही परलोक में हितैषी और इहलोक में माता-पिता के समान है| कुल मिलाकर क्रम से ध्यान, यज्ञ, पूजन और राम नाम के जाप से चारो युगों में ईश्वर को प्रसन्न किया जाता है, उन्हें प्राप्त किया जाता है |

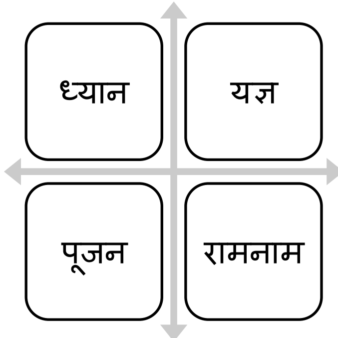

चारि खानि जग जीव अपार|

अवध तजें तनु नही संसारा||

चार प्रकार के अनगिनत जीव इस संसार में है| उनमें से जो अवध में अपना शरीर छोड़ते है, वो दोबारा पृथ्वी पर जन्म नही लेते है| वो मुक्ति पा जाता है, जन्म मरण के चक्र से छूट जाते है| चार प्रकार के जीवों में पहला है - अंडज अर्थात जो अंडे से उत्पन्न होते है| इनमें पक्षी, सर्प, मछली आदि आते है| इसमें प्रजनन के बाद अंडे बनते है, जिनसे कुछ

समय पश्चात बच्चे बाहर आते है| दूसरे प्रकार के जीव है -जरायुज अर्थात जो बच्चे पैदा करते है| इनमें स्तनधारी वर्ग के मनुष्य ,गाय, घोड़ा, बैल, शेर, बाघ, हाथी आदि जीव जंतु आते है| जीवों की तीसरी श्रेणी उद्भिज की है जिसमें ,पृथ्वी से प्रकट होने वाले जीव आते है| इस श्रेणी की पूरी व्याख्या तो उपलब्ध नही है| हो सकता है जमीन के अन्दर बनने वाले गोजर, जोंक आदि को रखा जा सकता है| चौथी क़िस्म को स्वेदज कह सकते है| इसमें मल ,मूत्र, स्वेद आदि से प्रकट होने वाले निकृष्ट जीव आते है| इनमें पेट में उत्पन्न कृमि, या इसी तरह के जीव आ सकते है |

इन चार प्रकार के जीवों के कई सन्दर्भ पूरे रामचरितमानस में दिखते है| कुछ उद्धृत है|

आकर चारि जीव जग अहहीं|

कासी मरत परम पद लहहीं||

सुठि सुन्दर संबाद बर

बिरचे बुद्‌धि बिचारि|

तेइ एहि पावन सुभग

सर घात मनोहर चारि||

इन पंक्तियों में रामचरितमानस को पवित्र और सुन्दर सरोवर की संज्ञा दी गई है| इस सरोवर के चार मनोहर घाट के रूप में चार अत्यंत उत्तम संवाद माने गए है शिव पार्वती संवाद, काकभुशुण्डि गरूड संवाद, याज्ञवल्क्य

भारद्वाज संवाद, तुलसी संत संवाद | राम कथा के उदगम की कथा भी रामचरितमानस में वर्णित है| शिवजी ने इस सुहावने चरित्र को रचा, फिर कृपा करके पार्वती जी को सुनाया| फिर उसे काकभुशुण्डि जी को सुनाया | काकभुशुण्डि जी ने याज्ञवल्क्य को सुनाया और फिर भारद्वाज जी ने इसे सुना| तुलसीदास ने इसे संतों से सुना , जिसका ज्यादा विवरण तो कथा में नही दिखता है |

अरथ धरम कामादिक चारी|

कहब ग्यान बिग्यान बिचारी||

ज्ञान और विज्ञान का विचार कर चार पायदानों -अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष के द्वारा पूरी कथा कही गई है| ये चार स्तर ही मनुष्य के पूरे जीवन में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहते है| धन की प्राप्ति के लिए ही मानव जीवन का आरंभिक दौड़ गुजरता है| धन प्राप्ति का स्थायी स्रोत मिल जाने के बाद या मिलाने के दौरान मानव धर्म की ओर या धर्म से विमुख अग्रसर होता है| उसके बाद काम का प्रादुर्भाव होता है| जीवन के अंतिम क्षणों में मोक्ष प्राप्ति ही मुख्य ध्येय रहता है| इसे जीवन के चार पायदान माने जा सकते है| अर्थ का महत्त्व मानव जीवन में जन्म से ही होता है ,तथा मृत्यु तक बना रहता है| धर्म

का प्रवेश मानव की बुद्धि विकसित होने के बाद होता है| काम का आरम्भ संतति हेतु होता है और इसकी आयु अर्थ और धर्म की आयु से कम होती है| मोक्ष की और अग्रसर होने का काम जीवन के कुछ पड़ाव पार कर लेने के बाद होता है|

इन चार पदार्थों का जिक्र भी कई अलग अलग जगहों पर मिलता है |

कृपासिन्धु मुनि दरसन तोरे|

चारि पदारथ करतल मोरे||

श्रीगुरु चरन सरोज रज

निज मनु मुकुरु सुधारि|

बरनऊँ रघुबर बिमल जसु

जो दायक फल चारि ||

चारि पदारथ करतल ताकें|

प्रिय पितु मातु प्राण सम जाकें||

मुदित अवधपति सकल सूत

बधुन्ह समेत निहारि|

जनु पाए महिपाल मनि

क्रियन्ह सहित फल चारि||

इसमें चारो राजकुमारों की शादी देखकर अवधानारेश दशरथ की मनोदशा वर्णित है|

इसमें जो चार फल बताए गए है, वे ऊपर बताए गए र्थ ,धर्म ,काम और मोक्ष ही है| परन्तु इन चौपाइयो में इन फलो को हासिल करने में निष्पादित होने वाली क्रियाओं का भी जिक्र है |ये क्रियाएं है - यज्ञ, श्रद्धा ,योग, और ज्ञान| इनमें से हरेक क्रिया हरेक फल का अंश देने में सक्षम है |

सुन्दरी सुंदर बरन्ह सह सब एक मंडप राजहिं |

जनु जीव उर चारिउ अवस्था बिभुन सहित बिराजहिं||

ये दृष्टांत चारो भाइयो की शादी के समय का है और उन्हें एक साथ बैठे देखकर कैसा लगता है, इसका जिक्र इन पंक्तियों में है| इनलेम जीव की चार अवस्थाओं और उनके स्वामियो का उल्लेख है| जीव की चार अवस्थाए है - जाग्रत, स्वप्नसुषु ,प्त और तुरीय| आज का विज्ञान भी इन्हें मानता है और इन्हें conscious, sleep, rapid eye movement, trans जैसी अवस्थाओं में बांटने का प्रचलन है| परन्तु इन चारो अवस्थाओं के स्वामियों से आधुनिक ज्ञान अभी तक अनभिज्ञ लगता है |वे है - विश्व, तैजस, प्राज्ञ और ब्रह्म |

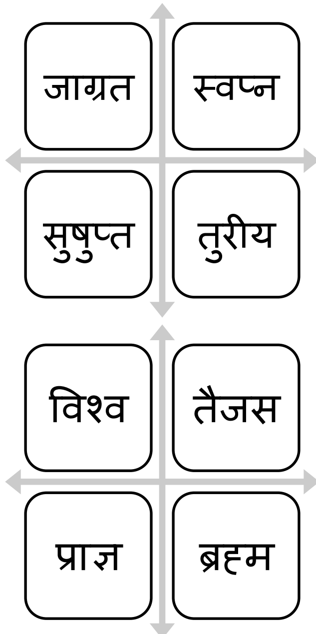

चारि भाँति भोजन बिधि गई|

एक एक बिधि बरनि न जाई||

भोज्य पदार्थो के चार प्रकार होते है| इनकी ओर इन पंक्तियों में इशारा किया गया है| ये राम सीता के विवाह के समय परोसे गए भोजन के सन्दर्भ में कही गई है| हरेक प्रकार के कई कई भोजन परोसे गए थे| ये चार

प्रकार है - चर्व्य अर्थात चबाकर खाने वाले खाद्य, चोष्य यानी चूसकर खाने वाले पदार्थ , लेह्य का अर्थ चाटकर खाने वाला भोजन और पेय मतलब पीकर खाने योग्य| इसतरह के भोज्य पदार्थों का वर्गीकरण आज भी मान्य है |

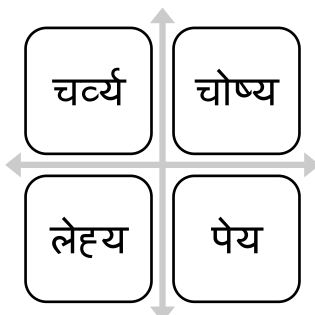

सेवक सठ नृप कृपन कुनारी|

कपटी मित्र सूल सम चारी||

सुग्रीव को समझाते हुए श्रीराम ने समाज में मौजूद पीड़ा देने वाले किरदारों को समझाया

है| उन्होंने इनकी संख्या चार बताई है - मूर्ख सेवक ,कंजूस राजा ,कुलटा स्त्री, कपटी मित्र|

बन्दर द्वरा मक्खी उड़ाने में तलवार से मालिक की नाक काटने की कथा प्रचलित है| इसीतरह शेक्सपियर के you to Brutus का सन्दर्भ भी मायने रखता है| आज भी कई हत्याओं के पीछे नारी और मित्रो का हाथ झलकता है| इसलिए इनका संज्ञान लेना आज की आवश्यकता है|

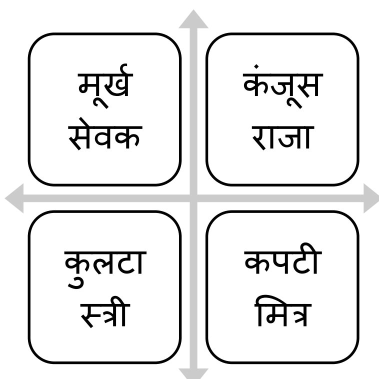

अनुज बधू भागिनी सुत नारी|

सुनु सठ कन्या सम ए चारी||

इन पंक्तियों में श्रीराम ने बालि को मरने का कारण समझाते हुए ये कहा है कि चार प्रकार की स्त्रियों का सम्मान एक समान करना चाहिए| इनको जो बुरी नजर से देखता है, उनको मारने से कोई पाप नही होता है |ये है - छोटे भाई की पत्नी, बहन, पुत्रवधू, और कन्या| आज के कुत्सित सामाजिक परिवेश में ये काफी सार्थक है| मानसिक विकृति से ग्रस्त समाज में इस तरह के कार्यों की पुनरावृत्ति हो रही है| जरूरत है प्रभु श्रीराम के अवतरण की, जो इस तरह के आचरणों को दण्डित करे| वास्तव में आज का समाज भक्ति से विमुख हो चुका है और उसपर डर के अतिरिक्त और कोई प्रभावशाली अवरोध नजर नही आता है|

संस्कारहीन समाज आज न्याय को फिर से परिभाषित करने की मांग करता है| इस वर्जित कुदृष्टि का संज्ञान आज समाज के हर वर्ग को दिलाना आवश्यकता है|

निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा|

चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा||

बालि वध के बाद, सुग्रीव जब सीता जी की खोज के लिए कोई परिश्रम नही कर रहे थे, तब महावीर हनुमान ने उन्हें चार प्रकार की

नीति को समझा कर कहा था| वे है - साम, दाम, दण्ड और भेद | आज भी यह निति हर तरह के विचार विनिमयो में सार्थक है| प्रारम्भ हमेशा स्तुति वन्दना, वार्तालाप या बातचीत से होता है| उसके बाद आर्थिक स्तर पर समझोता करने की कोशिश होती है| उसके बाद का स्तर दंड का है, जिसकी परिणति भेद यानी से हो सकती है|

इसकी तुलना भगवान विष्णु के चतुर्भुज स्वरूप में उपस्थित शंख, चक्र गदा, पद्म से भी दी जा सकती है| सबसे पहले पद्म देकर बात समझाया जाता है, फिर शंखनाद कर डराया जाता है| इसके बाद भी न समझाने वाले पर गदा का प्रहार हो सकता है| यदि कोई भी अस्त्र कारगर न हो तो फिर चक्र से अंग भंग का रास्ता चुना जाता है| इस तरह

ही आधुनिक काल में वार्ताओं और समझौतों को संचालित किया जाता है|

चारिउ चरन धर्म जग माहीं|

पूरी रहा सपनेहुँ अघ नाहीं||

इन चौपाइयों में धर्म के चार चरण का उल्लेख किया गया है| राम राज्य के गुण बताते हुए राज्य में सभी चार चरणों का भरपूर समावेश बतलाया गया है| धर्म के ये चार चरण है - सत्य ,शौच, दया और दान| इन चारो से धर्म की वृद्धि होती है | सत्य का पालन करना

चाहिए| इससे मन की शुचिता का बोध होता है| तन की शुचिता शौच से निरूपित होती है| दया मानसिक शुचिता को कर्म से जोड़ने की व्यवस्था है| दान एक सामाजिक दायित्व है, जो दाता और प्राप्तकर्ता दोनों को जोड़ता है, दोनों को सुखा देता है|

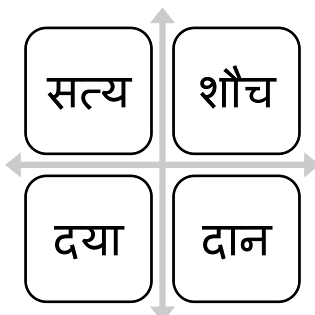

संख्या पांच

पंच सब्द धुनि मंगल गाना|

पट पाँवड़े परहिं बिधि नाना||

श्रीराम सीता के विवाह के समय की मंगल ध्वनियो का इन पंक्तियों में जिक्र किया गया है| पंचशब्द वास्तव में विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रो का परिचायक है - तंत्री, ताल, झाँझ, नगारा , तुरही| इन वाद्य यंत्रो में दूर तक सुनाई देने की क्षमता है और इनसे ध्वनि अलग अलग तरह से उत्सर्जित होती है| तुरही में वायु के निकास में प्रघाती तरंगे उत्पन्न होती है| नगारा में एक झिल्ली के कंपन से आवाज पैदा की जाती है| आघात से भी ध्वनि का निर्माण माहौल को पवित्रता देता है| इसीतरह पाँच प्रकार की मोहक ध्वनियाँ का उल्लेख भी इन पंक्तियों में है - वेदध्वनि, वन्दिध्वनि, जयध्वनि, शंखध्वनि, हुलूध्वनि| इन ध्वनियो में मंत्रपाठ, वन्दना, शौर्यगान, शंख और उत्साहवर्धक कर्णप्रिय और पावन उद्घोषो की ओर ध्यान खींचा गया है|

पवित्रता के लिए इन ध्वनियो का आज भी महत्त्व है |

पंच कवल करि जेवन लागे|

गारि गान सुनि अति अनुरागी||

भोजन करने के पहले पांच कौर निकालकर ही खाना शुरू करना पड़ता है| इनमें से हरेक ग्रास को अलग अलग अर्पित किया जाता है और उसके साथ स्वाहा करते हुए मन्त्र जाप की प्रक्रिया बताई गई है| ये ग्रास जिन्हें अर्पित किए जाते है, वे इसप्रकार है - प्राणाय, अपानाय, व्यानाय, उदानाय, समानाय| ये वास्तव में अपनी आत्मा का अनुसंधान करते हुए समर्पित आहुतियाँ है| ये पांचो नाम शरीर में पाई जाने वाली प्राणवायु के है| वायु का शरीर के अन्दर इन पांचो में निरंतन बदलते

रहना ही मानवीय चेतना का कारण है, स्मृतियों को सहेजता है, रक्त प्रवाह को सुव्यवस्थित रखता है, पाचन और श्वसन तंत्र को रोगरहित करता है| इन पांचो प्रकार से प्रभावित शरीर के भागो का विवरण नीचे है|

प्राणवायु का नाम	**शरीर के अंग**
प्राण	रक्त
अपान (नीचे जाने वाली)	रस
व्यान	चरबी, मांस
उदान (ऊपर जाने वाली)	स्नायु तंत्र
समान	हड्डी

हमारे सांस लेने की प्रक्रिया तीन चरणों से होकर गुजराती है - पूरक, कुंभक, रेचक, जिन्हें हठयोगी अभ्यंतर वृत्ति (सांस लेना), स्तम्भ

वृत्ति (सांस रोकना) और बाह्य वृत्ति (सांस छोड़ना) कहते है| कुंभक को पूरक या रेचक के दोनों के बाद प्रयोग में लाया जा सकता है| सांस द्वारा स्वास्थ्य का नियंत्रण किया जा सकता है| इन तीनो प्रक्रियो के माध्यम से पांच प्रकार की वायु प्रभावित होती है, जिसका जिक्र इस चौपाई में किया गया है| खाने के पहले निकाले गए पांच निवाले, इन पांच प्रकार की प्राणवायु में आए दोषों के निराकरण के लिए प्रयुक्त होते है|

छिति जल पावक गगन समीरा|

पंच रचित अति अधम सरीरा||

बालि वध के बाद, तारा को समझते हुए, श्रीराम ने शरीर से आसक्ति को हटाने के लिए अधम शरीर प्रयोग किया था| भक्ति का मार्ग

बताते हुए उन्होंने शरीर निर्माता पांचो तत्वों का खुद ही इन पंक्तियों में जिक्र किया है |वे तत्व है - पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, वायु| इनका विवरण तो भारतीय धर्मग्रंथों में कई जगह मिलता है |

संख्या छः

ईति भीति जनु प्रजा दिखारी |

त्रिबिध ताप पीड़ित ग्रह मारी||

वैसे तो इन पंक्तियों में तीन और छः दोनों संख्याओं का जिक्र है पर इसे छह में शामिल किया गया है| खेतो में बाधा देने वाले उपद्रवों की संख्या छः है |इन्हें ही ईति कहा जाता है - अतिवृष्टि ,अनावृष्टि, चूहों का आक्रमण, टिड्डियो का हमला, पक्षियों से हानि, दुश्मन का आक्रमण |ये छः आधुनिक समय में भी

सार्थक है| रासायनों से होने वाली हानि, मिटटी का अपक्षरण और अपरदन आदि भी आज के लिए प्रासंगिक है, परन्तु उस काल में ये मानवजनित बाधाए अज्ञात थीं |

इसके साथ इन पंक्तियों में त्रिबिध ताप का भी जिक्र है -आध्यात्मिक, आधिदैविक, और आधिभौतिक |

षट बिकार जित अनघ अकामा|

अचल अकिंचन सुचि सुखधामा||

महर्षि नारद द्वारा पूछे जाने पर भगवान श्रीराम ने संतों का लक्षण स्पष्ट करते हुए छः विकारों का जिक्र किया था| इना विकारों को जीतना संत बनाने की पहली पायदान होती है| ये है - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर| इनमें से पहले तीन का जिक्र तो मन को

प्रभावित करने वाले कारकों में संख्या तीन में पहले भी दिया गया है |

संख्या सात

सप्त प्रबंध सुभग सोपाना| ग्यान नयन निरखत मन माना||

रामचरितमानस नामक सरोवर की सात सीढियों के रूप में सात काण्ड की कल्पना की गई है ,जिनको ज्ञान रूपी नेत्रों से देखते ही मन प्रसन्न हो जाता है| इसके सात कांड हैं - बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड, उत्तरकाण्ड |

सकल अंग संपन्न सुराऊ |

राम चरन आश्रित चित चाऊ||

इनमें राज्य के सकल अंग का जिक्र आया है, जिनकी संख्या सात होती है -स्वामी, अमात्य ,सुहृद,कोष , राष्ट्र ,दुर्ग, सेना| उस जमाने में न्यायपालिका, व्यवस्थापिका और कार्यपालिका का प्रचालन नही था| सामाजिक व्यवस्था अलग थी, संस्कृति अलग थी, मानव मूल्य अलग थे, पर राज्य को इस तरह विभाजित करने का प्रावधान उससमय भी था |

संख्या आठ

नारि सुभाउ सत्य सब कहहिं |

अवगुन आठ सदा उर रहहिं||

साहस अनृत चपलता माया|

भय अबिबेक असौच अदाया||

मंदोदरी द्वारा श्रीराम की शरण में जाने की सलाह सुनकर रावण ने ये प्रतिक्रया दी थी| इन पंक्तियों में उसने नारी स्वभाव के आठ दोषों का नाम लिया है| ये आठ दोष है - साहस, असत्य या झूठ, चंचलता, माया या छल, भय या डरपोक स्वभाव, अविवेक या मूर्खता या बुद्धिहीनता, अपवित्रता, निर्दयता| इनमें से कौन से दोष पुरुषों के है, यह भी एक विचारणीय विन्दु है| साथ साथ ये सभी आज के लिए प्रासंगिक है या नहीं ये भी अनुसंधान योग्य है |

संख्या नौ

देव एकु गुनु धनुष हमारें|

नव गुन परम पुनीत तुम्हारे||

सीता स्वयंवर के समय धनुष भंजन के बाद, जब परशुराम मिथिला में पधारते है, तो श्रीराम ने उन्हें शांत करने के लिए ये शब्द कहे थे| इसमें उन्होंने स्पष्ट किया है कि श्रीराम के पास तो एक ही गुण है, जो उनके धनुष धारण करने से उत्पन्न होता है| परन्तु परशुराम तो नौ गुणों से संपन्न है| इन नौ गुणों का नाम इस प्रकार है - शम, दम,ताप , शौच, क्षमा, सरलता, ज्ञान, विज्ञान और आस्तिकता |

तब मारीच हृदयँ अनुमाना|

नवहिं बिरोधें नहिं कल्याना||

रावण ने जब मारीच को स्वर्ण मृग बनने के लिए बाध्य किया, तब ये मारीच की सोच को दर्शाती पंक्तियाँ है| ताड़का, सुबाहु के साथ मारीच वध भी हो जाता, परन्तु श्रीराम ने

बिना फल(धार) वाले बाण से उसे दूर फेंक दिया था| मारीच को ये बात स्मरण थी, पर रावण की बात मानने के अलावा उसके पास और कोई विकल्प नही था| इसलिए उसने कल्याण के लिए नौ लोगो से वैर न लेने की बात बताई| ये आज के लिए भी प्रासंगिक है| ये नौ लोग है - शस्त्रधारी, भेदी, समर्थ स्वामी, मूर्ख, धनवान, वैद्य, भाट,कवि , रसोइया | इसलिए रावण के हाथो मरने से उसने राम के हाथो मरना स्वीकार किया|

अरण्य कांड में जब प्रभु श्रीराम शबरी के आश्रम में गए, तो उन्होंने नवधा भक्ति का सार बताया था| भक्ति की महत्ता स्थापित करते हुए प्रभु ने कहा की भक्ति विहीन के पास जाति,धर्म , कुल, बडाई, धन, कुटुंब ,

गुण और चतुरता होने के बावजूद भी सब बेकार है| इसी सन्दर्भ में भक्ति के जो मार्ग बताए गए है ,वे इस प्रकार हैं -:

1. संतों का सत्संग
2. भगवान की कथा से प्रेम
3. गुरू के चरण कमलों की अभिमानरहित सेवा
4. भगवान के गुण समूहों का गान
5. भगवान के मन्त्रों का जाप और भगवन में दृढ़ विश्वास
6. इन्द्रिय निग्रह, शील, वैराग्य, धर्म का आचरण
7. जगत को भगवानमय देखना
8. जो मिले उसमें संतोष तथा परदोष को न देखना
9. सरलता, कपटरहित व्यवहार

इनमें से किसी एक प्रकार की भक्ति का आलंबन भी भगवान के सामीप्य का सुख देता है|

संख्या अट्ठारह

ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं|

देख ब्रह्म सामान सब माहीं||

यह दृष्टांत उस समय का है जब अरण्य काण्ड में लक्ष्मण जी ने श्रीराम से ज्ञान ,वैराग्य और माया के संबंध में प्रश्न किया था| श्रीराम ने ज्ञान की परिभाषा बताते हुए अट्ठारह दोष बताए थे जिनके कारण कर्म फलदायक नही हो पाते है| वे दोष इसप्रकार है - मान, दंभ, हिंसा, क्षमाराहित्य,टेढापन , आचार्य सेवा का अभाव, अपवित्रता, अस्थिरता, मन का निगृहित न होना, इन्द्रियों के विषय में

आसक्ति, अहंकार, जन्म-ज़रा-मृत्यु-व्याधिमय जगत में सुखबुद्धि, स्त्रीघर -पुत्र-,आदि में आसक्ति और ममता इष्ट प्राप्ति में हर्ष, अनिष्ट का शोक, भक्ति का अभाव, एकांत में मन न लगना, विषयी मनुष्यों के संग में प्रेम |

लेखक

डॉ हिमांशु शेखर, वैज्ञानिक जी, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के आयुध और समाघात अभियांत्रिकी महानिदेशालय में निदेशक (परियोजना अनुवीक्षण) है|

Dr Himanshu Shekhar, Sc 'G', is Director (Project Monitoring) at the office of Director General (Armament and Combat Engineering) of DRDO.

Academic Achievements (शैक्षणिक उपलब्धियां)
Mechanical Engineering (यांत्रिकी अभियांत्रिकी) में Ph.D.
IIT, Kanpur M.Tech में CPI = 10.00
GATE 91 Score : 99.57 percentile
First class first (85.13%) with distinction in Graduation
First class (80.00%) with distinction in Intermediate
Merit scholarship during Inter, Graduation and M.Tech

Publications (प्रकाशन)
Technical Books : 22 in English, 20 in Hindi
Journal Articles : 65, Conference publications: 59
Invited talks: 92, हिंदी में तकनीकी आलेख: 89

Awards and Recognitions (पुरस्कार और पहचान)
साहित्यकार संसद से 2003 आचार्य रामनरेश त्रिपाठी शिखर साहित्य सम्मान
DRDO से 2010 में 'राकेट रहस्य' पुस्तक के लिए राजभाषा पुस्तक पुरस्कार
Agni Award for Excellence in Self-Reliance 2001
Young Scientist Award 2004
Mr Engineers – 2003 from Institution of Engineers (India)
National Science Day Oration Award – 2003
Editorial Board of Central European Journal of Energetic Materials and Bioglobia
Science day awards, Technology day awards, Safety day awards, हिंदी प्रतियोगिता पुरस्कार आदि

Professional Competence
Rocket propulsion, Gun propulsion, Pyrotechnics, Explosive Science, Ballistic Prediction, Structural Integrity analysis, Modeling and Simulation of Armament Systems, Mathematical tool development, …….